Digitized by eGangotri

ज्ञान की कहानियाँ

वेदव्रत द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुक्रम

भला आदमी	7
सच्चा लकड़हारा	11
लालची राजा	15
बिना विचारे जो करे...	19
दया का फल	22
पिता और पुत्र	25
ईश्वर सब कहीं है	28
मित्र की सलाह	31
स्वर्ग के दर्शन	35
सबसे बड़ा पुण्यात्मा	41
मक्खी का लोभ	46
एकता की शक्ति	49
असमय का उपदेश	52
निर्दयी टट्टू	55
ब्रह्माजी के थैले	58
सच्ची जीत	61
मूर्खराज	65
जाओ और आओ	68
खरगोश और मेंढक	72

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बादशाह और माली 75
नेकी का बदला 78
अतिथि सत्कार 81
सोहबत का असर 85
सारस की शिक्षा 88
उपकार का बदला 92
छली गधा 95
लालची बंदर 98
लालची कुत्ता 101
बिल्ली और बंदर 103
शेर-चीता लड़े, सियार ने हिरन खाया 106
झूठ बोलने का फल 109
कछुआ और खरगोश 111
कुत्ते की भूल 115
सच्चे हिरन 117
दूसरे भ भरोसा मत करो 121
गर्व का परिणाम 125

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भला आदमी

एक धनी पुरुष ने एक मन्दिर बनवाया। मन्दिर में भगवान् की पूजा करने के लिये एक पुजारी रखा। मन्दिर के खर्च के लिये बहुत-सी भूमि, खेत और बगीचे मन्दिर के नाम लगाये। उन्होंने ऐसा प्रबन्ध किया था कि जो मन्दिर में भूखे, दीन-दुःखी या साधु-संत आवें, वे वहाँ दो-चार दिन ठहर सकें और उनको भोजन के लिये भगवान् का प्रसाद मन्दिर से मिल जाया करे। अब उन्हें एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता हुई जो मन्दिर की सम्पत्ति का प्रबन्ध करे और मन्दिर के सब कामों को ठीक-ठीक चलाता रहे।

बहुत-से लोग उस धनी पुरुष के पास आये। वे लोग जानते थे कि यदि मन्दिर की व्यवस्था का काम मिल जाय तो वेतन अच्छा मिलेगा। लेकिन उस धनी पुरुष ने सबको लौटा दिया। वह सबसे कहता था—'मुझे एक भला आदमी चाहिये, मैं उसको अपने-आप छाँट लूँगा।'

बहुत-से लोग मन-ही-मन उस धनी पुरुष को गालियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देते थे। बहुत लोग उसे मूर्ख या पागल बतलाते थे। लेकिन वह धनी पुरुष किसी की बात पर ध्यान नहीं देता था। जब मन्दिर के पट खुलते थे और लोग भगवान् के दर्शन के लिये आने लगते थे तब वह धनी पुरुष अपने मकान की छत पर बैठकर मन्दिर में आने वाले लोगों को चुपचाप देखा करता था।

एक दिन एक मनुष्य मन्दिर में दर्शन करने आया। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे। वह बहुत पढ़ा-लिखा भी नहीं जान पड़ता था। जब वह भगवान् का दर्शन करके जाने लगा तब धनी पुरुष ने उसे अपने पास बुलाया और कहा—'क्या आप इस मन्दिर की व्यवस्था सँभालने का काम स्वीकार करेंगे?'

वह मनुष्य बड़े आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा—'मैं तो बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। मैं इतने बड़े मन्दिर का प्रबन्ध कैसे कर सकूँगा?' धनी पुरुष ने कहा—'मुझे बहुत विद्वान् नहीं चाहिए। मैं तो एक भले आदमी को मन्दिर का प्रबन्धक बनाना चाहता हूँ।'

उस मनुष्य ने कहा—'आपने इतने मनुष्यों में मुझे ही क्यों भला आदमी माना?'

धनी पुरुष बोला—'मैं जानता हूँ कि आप भले आदमी हैं। मन्दिर के रास्ते में एक ईंट का टुकड़ा गड़ा रह गया था और उसका एक कोना ऊपर निकला था। मैं इधर बहुत दिनों से देखता था कि उस ईंट के टुकड़े की नोक से लोगों को ठोकर लगती थी। लोग गिरते थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लुढ़कते थे और उठकर चल देते थे। आपको उस टुकड़े से ठोकर लगी नहीं; किंतु आपने उसे देखकर ही उखाड़ देने का यत्न किया। मैं देख रहा था कि आप मेरे मजदूर से फावड़ा माँगकर ले गये और उस टुकड़े को खोदकर आपने वहाँ की भूमि भी बराबर कर दी।'

उस मनुष्य ने कहा—'यह तो कोई बात नहीं है। रास्ते में पड़े काँटे, कंकड़ और ठोकर लगने योग्य पत्थर, ईंटों को हटा देना तो प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।'

धनी पुरुष ने कहा—'अपने कर्तव्य को जानने और पालन करने वाले लोग ही भले आदमी होते हैं।'

वह मनुष्य मन्दिर का प्रबन्धक बन गया। उसने मन्दिर का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सच्चा लकड़हारा

मंगल बहुत सीधा और सच्चा था। वह बहुत गरीब था। दिनभर जंगल में सूखी लकड़ी काटता और शाम होने पर उनका गट्ठर बाँधकर बाजार जाता। लकड़ियों को बेचने पर जो पैसे मिलते थे, उनसे वह आटा, नमक आदि खरीदकर घर लौट आता था। उसे अपने परिश्रम की कमाई पर पूरा संतोष था। एक दिन मंगल लकड़ी काटने जंगल में गया। एक नदी के किनारे एक पेड़ की सूखी डाल काटने वह पेड़ पर चढ़ गया। डाल काटते समय उसकी कुल्हाड़ी लकड़ी में से ढीली होकर निकल गयी और नदी में गिर गयी। मंगल पेड़ पर से उतर आया। नदी के पानी में उसने कई बार डुबकी लगायी; किंतु उसे अपनी कुल्हाड़ी नहीं मिली। मंगल दुःखी होकर नदी के किनारे दोनों हाथों से सिर पकड़कर बैठ गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसके पास दूसरी कुल्हाड़ी खरीदने को पैसे नहीं थे। कुल्हाड़ी के बिना वह अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

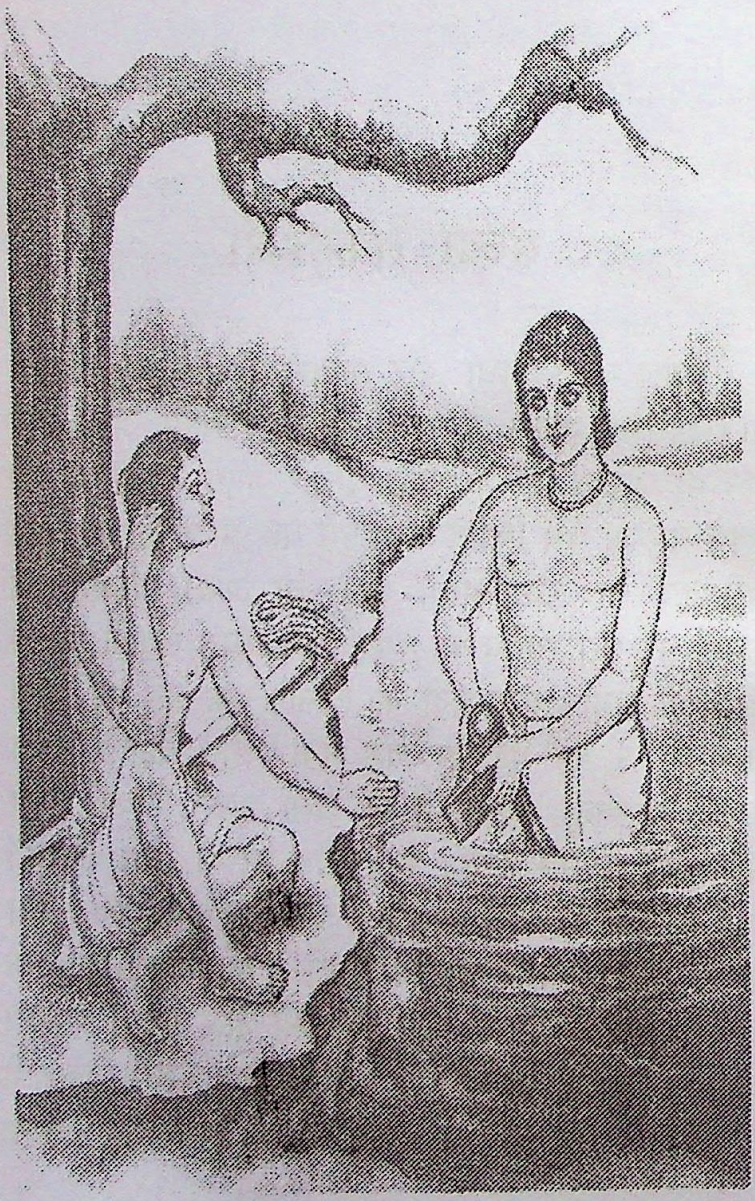

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और अपने परिवार का पालन कैसे करेगा, यह बड़ी भारी चिन्ता उसे सता रही थी।

वन के देवता को मंगल पर दया आ गयी। वह बालक का रूप धारण करके प्रकट हो गये और बोले—'भाई! तुम क्यों रो रहे हो?'

मंगल ने उन्हें प्रणाम किया और कहा—'मेरी कुल्हाड़ी पानी में गिर गयी। अब मैं लकड़ी कैसे काटूँगा और अपने बाल-बच्चों का पेट कैसे भरूँगा?'

देवता ने कहा—'रोओ मत! मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी निकाल देता हूँ।'

देवता ने पानी में डुबकी लगायी और एक सोने की कुल्हाड़ी लेकर निकले। उन्होंने कहा—'तुम अपनी कुल्हाड़ी लो।'

मंगल ने सिर उठाकर देखा और कहा—'यह तो किसी बड़े आदमी की कुल्हाड़ी है। मैं गरीब आदमी हूँ। मेरे पास कुल्हाड़ी बनाने के लिये सोना कहाँ से आवेगा। यह तो सोने की कुल्हाड़ी है।'

देवता ने दूसरी बार फिर डुबकी लगायी और चाँदी की कुल्हाड़ी निकालकर वे मंगल को देने लगे। मंगल ने कहा—'महाराज! मेरे भाग्य खोटे हैं। आपने मेरे लिये बहुत कष्ट उठाया, पर मेरी कुल्हाड़ी नहीं मिली। मेरी कुल्हाड़ी तो साधारण लोहे की है।'

देवता ने तीसरी बार डुबकी लगाकर मंगल की लोहे की कुल्हाड़ी निकाल दी। मंगल प्रसन्न हो गया। उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धन्यवाद देकर अपनी कुल्हाड़ी ले ली। देवता मंगल की सच्चाई और ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले—'मैं तुम्हारी सच्चाई से प्रसन्न हूँ। तुम ये दोनों कुल्हाड़ियाँ भी ले जाओ।'

सोने और चाँदी की कुल्हाड़ी पाकर मंगल धनी हो गया। वह अब लकड़ी काटने नहीं जाता था। उसके पड़ोसी घुरहू ने मंगल से पूछा कि 'तुम अब क्यों लकड़ी काटने नहीं जाते?' सीधे स्वभाव के मंगल ने सब बातें सच-सच बता दीं। लालची घुरहू सोने-चाँदी की कुल्हाड़ी के लोभ में दूसरे दिन अपनी कुल्हाड़ी लेकर उसी जंगल में गया। उसने उसी पेड़ पर लकड़ी काटना प्रारम्भ किया। जान-बूझकर अपनी कुल्हाड़ी उसने नदी में गिरा दी और पेड़ से नीचे उतरकर रोने लगा।

वन के देवता घुरहू के लालच का दण्ड दने फिर प्रकट हुए। घुरहू से पूछकर उन्होंने नदी में डुबकी लगाकर सोने की कुल्हाड़ी निकाली। सोने की कुल्हाड़ी देखते ही घुरहू चिल्ला उठा—'यही मेरी कुल्हाड़ी है।'

वन के देवता ने कहा—'तू झूठ बोलता है, यह तेरी कुल्हाड़ी नहीं है।' देवता ने वह कुल्हाड़ी पानी में फेंक दी और वे अदृश्य हो गये। लालच में पड़ने से घुरहू की अपनी कुल्हाड़ी भी खोयी गयी। वह रोता-पछताता घर लौट आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लालची राजा

यूरोप में यूनान नाम का एक देश है। यूनान में पुराने समय में मीदास नाम का एक राजा राज्य करता था। राजा मीदास बड़ा ही लालची था। अपनी पुत्री को छोड़कर उसे दूसरी कोई वस्तु संसार में प्यारी थी तो बस सोना ही प्यारा था। वह रात में सोते-सोते भी सोना इकट्ठा करने का स्वप्न देखा करता था।

एक दिन राजा मीदास अपने खजाने में बैठा सोने की ईंटें और अशर्फियाँ गिन रहा था। अचानक वहाँ एक देवदूत आया। उसने राजा से कहा—'मीदास! तुम बहुत धनी हो।'

मीदास ने मुँह लटकाकर उत्तर दिया—'मैं धनी कहाँ हूँ। मेरे पास तो यह बहुत थोड़ा सोना है।'

देवदूत बोला—'तुम्हें इतने सोने से भी संतोष नहीं? कितना सोना चाहिए तुम्हें?'

राजा ने कहा—'मैं तो चाहता हूँ कि मैं जिस वस्तु को हाथ से स्पर्श करूँ वही सोने की हो जाय।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवदूत हँसा और बोला—'अच्छी बात! कल सबेरे से तुम जिस वस्तु को छुओगे, वही सोने की हो जायगी।'

उस दिन रात में राजा मीदास को नींद नहीं आयी। बड़े सबेरे वह उठा। उसने एक कुर्सी पर हाथ रखा, वह सोने की हो गयी। एक मेज को छुआ, वह सोने की बन गयी। राजा मीदास प्रसन्नता के मारे उछलने और नाचने लगा। वह पागलों की भाँति दौड़ता हुआ अपने बगीचे में गया और पेड़ों को छूने लगा। उसने फूल, पत्ते, डालियाँ, गमले छुए। सब सोने के हो गये। सब चमाचम चमकने लगे। मीदास के पास सोने का पार नहीं रहा।

दौड़ते-उछलते मीदास थक गया। उसे अभी तक यह पता ही नहीं लगा था कि उसके कपड़े भी सोने के होकर बहुत भारी हो गये हैं। वह प्यासा था और भूख भी उसे लगी थी। बगीचे से अपने राजमहल लौटकर एक सोने की कुर्सी पर वह बैठ गया। एक नौकर ने उसके आगे भोजन और पानी लाकर रख दिया। लेकिन जैसे ही मीदास ने भोजन को हाथ लगाया, सब भोजन सोना बन गया। उसने पानी पीने के लिये गिलास उठाया तो गिलास और पानी सोना हो गया। मीदास के सामने सोने की रोटियाँ, सोने के चावल, सोने के आलू आदि रखे थे और वह भूखा था, प्यासा था। सोना चबाकर उसकी भूख नहीं मिट सकती थी।

मीदास रो पड़ा। उसी समय उसकी पुत्री खेलते हुए वहाँ आयी। अपने पिता को रोते देख वह पिता की गोद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में चढ़कर उसके आँसू पोंछने लगी। मीदास ने पुत्री को अपनी छाती से लगा लिया। लेकिन अब उसकी पुत्री वहाँ कहाँ थी। मीदास की गोद में तो उसकी पुत्री की सोने की इतनी वजनी मूर्ति थी कि उसे वह गोद में उठाये भी नहीं रख सकता था। बेचारा मीदास सिर पीट-पीटकर रोने लगा। देवदूत को दया आ गयी। वह फिर प्रकट हुआ। उसे देखते ही मीदास उसके पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने लगा—'आप अपना वरदान वापस लौटा लीजिये।'

देवदूत ने पूछा—'मीदास! अब तुम्हें सोना नहीं चाहिए? बताओ तो एक गिलास पानी मूल्यवान् है या सोना? एक टुकड़ा रोटी भली या सोना?'

मीदास ने हाथ जोड़कर कहा—'मुझे सोना नहीं चाहिए। मैं जान गया कि मनुष्य को सोना नहीं चाहिए। सोने के बिना मनुष्य का कोई काम नहीं अटकता; किंतु एक गिलास पानी और एक टुकड़े रोटी के बिना मनुष्य का काम नहीं चल सकता। अब सोने का लोभ नहीं करूँगा।'

देवदूत ने एक कटोरे में जल दिया और कहा—'इसे सब पर छिड़क दो।'

मीदास ने वह जल अपनी पुत्री पर, मेज पर, कुर्सी पर, भोजन पर, पानी पर और बगीचे के पेड़ों पर छिड़क दिया। सब पदार्थ जैसे पहले थे, वैसे ही हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिना विचारे जो करे...

एक किसान ने एक नेवला पाल रखा था। नेवला बहुत चतुर और स्वामिभक्त था। एक दिन किसान कहीं गया था। किसान की स्त्री ने अपने छोटे बच्चे को दूध पिलाकर सुला दिया और नेवले को वहीं छोड़कर वह घड़ा और रस्सी लेकर कुएँ पर पानी भरने चली गयी।

किसान की स्त्री के चले जाने पर वहाँ एक काला साँप बिल में से निकल आया। बच्चा पृथ्वी पर कपड़ा बिछाकर सुलाया गया था और साँप बच्चे की ओर ही आ रहा था। नेवले ने यह देखा तो साँप के ऊपर टूट पड़ा। उसने साँप को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला और घर के दरवाजे पर किसान की स्त्री का रास्ता देखने गया।

किसान की स्त्री घड़ा भरकर लौटी। उसने घर के बाहर दरवाजे पर नेवले को देखा। नेवले के मुख में रक्त लगा देखकर उसने समझा कि इसने मेरे बच्चे को काटा है। दुःख और क्रोध के मारे भरा घड़ा उसने नेवले पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पटक दिया। बेचारा नेवला कुचलकर मर गया।

वह स्त्री दौड़कर घर में आयी। उसने देखा कि उसका बच्चा सुख से सो रहा है और वहाँ एक काला साँप कटा पड़ा है। स्त्री को अपनी भूल का पता लग गया। वह दौड़कर फिर नेवले के पास आयी और मरे नेवले को गोद में उठाकर रोने लगी। लेकिन अब उसके रोने से क्या लाभ? इसीलिये कहा है–

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दया का फल

बादशाह सुबुक्तगीन पहले बहुत गरीब था। वह एक साधारण सैनिक था। एक दिन वह बंदूक लेकर, घोड़े पर बैठकर जंगल में शिकार खेलने गया था। उस दिन उसे बहुत दौड़ना और हैरान होना पड़ा। बहुत दूर जाने पर उसे एक हिरनी अपने छोटे बच्चे के साथ दिखायी पड़ी। सुबुक्तगीन ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया।

हिरनी डर के मारे भागकर एक झाड़ी में छिप गयी; लेकिन उसका छोटा बच्चा पीछे छूट गया। सुबुक्तगीन ने हिरनी के बच्चे को पकड़ लिया और उसके पैर बाँधकर घोड़े पर उसे लाद लिया। बहुत ढूँढने पर भी जब उसे हिरनी नहीं मिली तो उस बच्चे को लेकर ही वह लौट पड़ा।

हिरनी ने देखा कि उसके बच्चे को शिकारी बाँधकर लिये जा रहा है। वह अपने बच्चे के मोह में झाड़ी से निकल आयी और सुबुक्तगीन के घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ने लगी। दूर जाकर सुबुक्तगीन ने पीछे देखा। अपने पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिरनी को दौड़ते देख उसे आश्चर्य हुआ और दया आ गयी। उसने उसके बच्चे के पैर खोलकर घोड़े से उतार दिया। हिरनी प्रसन्न होकर अपने बच्चे को लेकर भाग गयी।

उस दिन घर लौटकर जब रात में सुबुक्तगीन सोया तो उसने एक स्वप्न देखा। उससे कोई देवदूत कह रहा था—'सुबुक्तगीन! तूने आज एक गरीब हिरनी पर जो दया की है, उससे प्रसन्न होकर परमात्मा ने तेरा नाम बादशाहों की सूची में लिख लिया है। तू एक दिन बादशाह बनेगा।'

सुबुक्तगीन का स्वप्न सच्चा था। वह आगे चलकर बादशाह हुआ। एक हिरनी पर दया करने का उसे यह फल मिला। जो जीवों पर दया करता है, उस पर भगवान् अवश्य प्रसन्न होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पिता और पुत्र

एक जवान बाप अपने छोटे पुत्र को गोद में लिये बैठा था। कहीं से उड़कर एक कौआ उनके सामने खपरैल पर बैठ गया। पुत्र ने पिता से पूछा—'यह क्या है?'

पिता—'कौआ है।'

पुत्र ने फिर पूछा—'यह क्या है?'

पिता ने फिर कहा—'कौआ है।'

पुत्र बार-बार पूछता था—'क्या है?'

पिता स्नेह से बार-बार कहता था—'कौआ है।'

कुछ वर्षों में पुत्र बड़ा हुआ और पिता बूढ़ा हो गया। एक दिन पिता चटाई पर बैठा था। घर में कोई उसके पुत्र से मिलने आया। पिता ने पूछा—'कौन आया है?'

पुत्र ने नाम बता दिया। थोड़ी देर में कोई और आया और पिता ने फिर पूछा। इस बार झल्लाकर पुत्र ने कहा—'आप चुपचाप पड़े क्यों नहीं रहते। आपको कुछ करना-धरना तो है नहीं। कौन आया? कौन गया? यह टाँय-टाँय दिन भर क्यों लगाये रहते हैं?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पिता ने लम्बी साँस खींची। हाथ से सिर पकड़ा। बड़े दुःख भरे स्वर में धीरे-धीरे वह कहने लगा—'मेरे एक बार पूछने पर अब तुम क्रोध करते हो और तुम सैकड़ों बार पूछते थे एक ही बात—'यह क्या है?' मैंने कभी तुम्हें झिड़का नहीं। मैं बार-बार तुम्हें बताता—कौआ है।'

अपने माता-पिता का तिरस्कार करने वाले ऐसे लड़के बहुत बुरे माने जाते हैं। तुम सदा इस बात का ध्यान रखो कि माता-पिता ने तुम्हारे पालन-पोषण में कितना कष्ट उठाया है और तुमसे कितना स्नेह किया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ईश्वर सब कहीं है

दातादीन अपने लड़के गोपाल को नित्य शाम को सोने से पहिले कहानियाँ सुनाया करता था। एक दिन उसने गोपाल से कहा—'बेटा! एक बात कभी मत भूलना कि भगवान् सब कहीं हैं।'

गोपाल ने इधर-उधर देखकर पूछा—'पिताजी! भगवान् सब कहीं हैं? वह मुझे तो कहीं दीखते नहीं।'

दातादीन ने कहा—'हम भगवान् को देख नहीं सकते; किंतु वे हैं सब कहीं और हमारे सब कामों को देखते रहते हैं।'

गोपाल ने पिता की बात याद कर ली। कुछ दिन बाद अकाल पड़ा। दातादीन के खेतों में कुछ हुआ नहीं। एक दिन गोपाल को लेकर रात के अँधेरे में वह गाँव से बाहर गया। वह दूसरे किसान के खेत में से चोरी से एक गट्ठा अन्न काटकर घर लाना चाहता था। गोपाल को मेड़ पर खड़ा करके उसने कहा—'तुम चारों ओर देखते रहो, कोई इधर आवे या देखे तो मुझे बता देना।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जैसे ही दातादीन खेत में अन्न काटने बैठा गोपाल ने कहा—'पिताजी! रुकिये।'

दातादीन ने पूछा—'क्यों, कोई देखता है क्या?'

गोपाल—'हाँ, देखता है।'

दातादीन खेत से निकलकर मेड़ पर आया। उसने चारों ओर देखा। जब कोई कहीं न दीखा तो उसने पुत्र से पूछा—'कहाँ? कौन देखता है?'

गोपाल—'आपने ही तो कहा था कि ईश्वर सब कहीं है और सबके सब काम देखता है। तब वह आपको खेत काटते क्या नहीं देखेगा?' दातादीन पुत्र की बात सुनकर लज्जित हो गया। चोरी का विचार छोड़कर वह घर लौट आया।

A.P.S. Library
Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मित्र की सलाह

दुर्गादास था तो धनी किसान; किंतु बहुत आलसी था। वह न अपने खेत देखने जाता था, न खलिहान। अपनी गाय-भैंसों की भी वह खोज-खबर नहीं रखता था और न अपने घर के सामानों की ही देख-भाल करता था। सब काम वह नौकरों पर छोड़ देता था। उसके आलस और कुप्रबन्ध से उसके घर की व्यवस्था बिगड़ गयी। उसको खेती में हानि होने लगी। गायों के दूध-घी से भी उसे कोई अच्छा लाभ नहीं होता था।

एक दिन दुर्गादास का मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया। हरिश्चन्द्र ने दुर्गादास के घर का हाल देखा। उसने यह समझ लिया कि समझाने से आलसी दुर्गादास अपना स्वभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिये उसने अपने मित्र दुर्गादास की भलाई करने के लिये उससे कहा—'मित्र! तुम्हारी विपत्ति देखकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारी दरिद्रता को दूर करने का एक सरल उपाय मैं जानता हूँ।'

दुर्गादास—'कृपा करके वह उपाय तुम मुझे बता दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

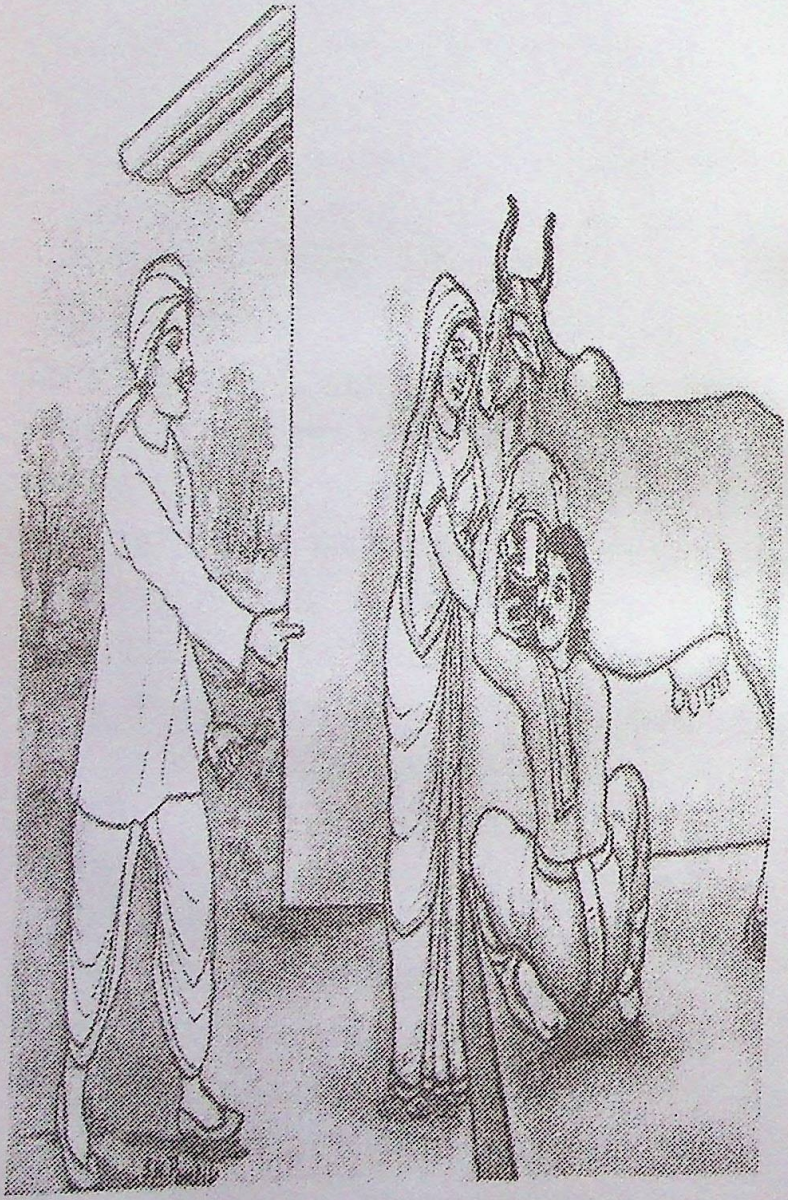

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं उसे अवश्य करूँगा।

हरिश्चन्द्र—'सब पक्षियों के जागने से पहिले ही मानसरोवर पर रहने वाला एक सफेद हंस पृथ्वी पर आता है। वह दो पहर दिन चढ़े लौट जाता है। यह तो पता नहीं कि वह कब कहाँ आवेगा; किन्तु जो उसका दर्शन कर लेता है, उसको कभी किसी बात की कमी नहीं होती।'

दुर्गादास—'कुछ भी हो, मैं उस हंस का दर्शन अवश्य करूँगा।' हरिश्चन्द्र चला गया। दुर्गादास दूसरे दिन बड़े सबेरे उठा। वह घर से बाहर निकला और हंस की खोज में खलिहान में गया। वहाँ उसने देखा कि एक आदमी उसके ढेर से गेहूँ अपने ढेर में डालने के लिये उठा रहा है। दुर्गादास को देखकर वह लज्जित हो गया और क्षमा माँगने लगा।

खलिहान से वह घर लौट आया और गोशाला में गया। वहाँ का रखवाला दूध दुहकर अपनी स्त्री के लोटे में डाल रहा था। दुर्गादास ने उसे डाँटा। घर पर जलपान करके हंस की खोज में वह फिर निकला और खेत पर गया। उसने देखा कि खेत पर अब तक मजदूर आये ही नहीं थे। वह वहाँ रुक गया। जब मजदूर आये तो उन्हें देर से आने का उसने उलाहना दिया। इस प्रकार वह जहाँ गया, वहीं उसकी कोई-न-कोई हानि रुक गयी।

सफेद हंस की खोज में दुर्गादास प्रतिदिन सबेरे उठने और घूमने लगा। अब उसके नौकर ठीक काम करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगे। उसके यहाँ चोरी होना बंद हो गया। पहिले वह रोगी रहता था, अब उसका स्वास्थ्य भी ठीक हो गया। जिस खेत से उसे दस मन अन्न मिलता था, उससे अब पचीस मन मिलने लगा। गोशाला से दूध बहुत अधिक आने लगा।

एक दिन फिर दुर्गादास का मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया। दुर्गादास ने कहा—'मित्र! सफेद हंस तो मुझे अब तक नहीं दीखा; किंतु उसकी खोज में लगने से मुझे लाभ बहुत हुआ है।'

हरिश्चन्द्र हँस पड़ा और बोला—'परिश्रम करना ही वह सफेद हंस है। परिश्रम के पंख सदा उजले होते हैं। जो परिश्रम न करके अपना काम नौकरों पर छोड़ देता है, वह हानि उठाता है और जो स्वयं परिश्रम करता है तथा जो स्वयं नौकरों की देखभाल करता है, वह सम्पत्ति और सम्मान पाता है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वर्ग के दर्शन

लक्ष्मीनारायण बहुत भोला लड़का था। वह प्रतिदिन रात में सोने से पहले अपनी दादी से कहानी सुनाने को कहता था। दादी उसे नागलोक, पाताल, गन्धर्वलोक, चन्द्रलोक, सूर्यलोक आदि की कहानियाँ सुनाया करती थी। एक दिन दादी ने उसे स्वर्ग का वर्णन सुनाया। स्वर्ग का वर्णन इतना सुन्दर था कि उसे सुनकर लक्ष्मीनारायण स्वर्ग देखने के लिये हठ करने लगा।

दादी ने उसे बहुत समझाया कि मनुष्य स्वर्ग नहीं देख सकता; किंतु लक्ष्मीनारायण रोने लगा। रोते-रोते ही वह सो गया। उसे स्वप्न में दिखायी पड़ा कि एक चम-चम चमकते देवता उसके पास खड़े होकर कह रहे हैं—'बच्चे! स्वर्ग देखने के लिये मूल्य देना पड़ता है। तुम सरकस देखने जाते हो तो टिकट लेते हो न? स्वर्ग देखने के लिये भी तुम्हें उसी प्रकार रुपये देने पड़ेंगे।'

स्वप्न में ही लक्ष्मीनारायण सोचने लगा कि मैं दादी से रुपये माँगूँगा। लेकिन देवता ने कहा—'स्वर्ग में तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रुपये नहीं चलते। वहाँ तो भलाई और पुण्यकर्मों का रुपया चलता है। अच्छा, तुम यह डिबिया अपने पास रखो। जब तुम कोई अच्छा काम करोगे तो एक रुपया इसमें आ जायगा और जब कोई बुरा काम करोगे तो एक रुपया इसमें से उड़ जायगा। जब यह डिबिया भर जायगी, तब तुम स्वर्ग देख सकोगे।'

जब लक्ष्मीनारायण की नींद टूटी तो उसने अपने सिरहाने सचमुच एक डिबिया देखी। डिबिया लेकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उस दिन उसकी दादी ने उसे एक पैसा दिया। पैसा लेकर वह घर से निकला। एक रोगी भिखारी उससे पैसा माँगने लगा। लक्ष्मीनारायण भिखारी को बिना पैसा दिये भाग जाना चाहता था, इतने में उसने अपने अध्यापक को सामने से आते देखा। उसके अध्यापक उदार लड़कों की बहुत प्रशंसा किया करते थे। उन्हें देखकर लक्ष्मीनारायण ने भिखारी को पैसा दे दिया। अध्यापक ने उसकी पीठ ठोंकी और प्रशंसा की।

घर लौटकर लक्ष्मीनारायण ने वह डिबिया खोली; किंतु वह खाली पड़ी थी। इस बात से लक्ष्मीनारायण को बहुत दुःख हुआ। वह रोते-रोते सो गया। सपने में उसे वही देवता फिर दिखायी पड़े और बोले—'तुमने अध्यापक से प्रशंसा पाने के लिये पैसा दिया था, सो प्रशंसा मिल गयी। अब रोते क्यों हो? किसी लाभ की आशा से जो अच्छा काम किया जाता है, वह तो व्यापार है, वह पुण्य थोड़े ही है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूसरे दिन लक्ष्मीनारायण को उसकी दादी ने दो आने पैसे दिये। पैसे लेकर उसने बाजार जाकर दो संतरे खरीदे। उसका साथी मोतीलाल बीमार था। बाजार से लौटते समय वह अपने मित्र को देखने उसके घर चला गया। मोतीलाल को देखने उसके घर वैद्य आये थे। वैद्यजी ने दवा देकर मोतीलाल की माता से कहा—'इसे आज संतरे का रस देना।' मोतीलाल की माता बहुत गरीब थी। वह रोने लगी और बोली—'मैं मजदूरी करके पेट भरती हूँ। इस समय बेटे की बीमारी में कई दिन से काम करने नहीं जा सकी। मेरे पास संतरे खरीदने के लिये एक भी पैसा नहीं है।'

लक्ष्मीनारायण ने अपने दोनों संतरे मोतीलाल की माँ को दिये। वह लक्ष्मीनारायण को आशीर्वाद देने लगी। घर आकर जब लक्ष्मीनारायण ने अपनी डिबिया खोली तो उसमें दो रुपये चमक रहे थे।

एक दिन लक्ष्मीनारायण खेल में लगा था। उसकी छोटी बहिन वहाँ आयी और उसके खिलौनों को उठाने लगी। लक्ष्मीनारायण ने उसे रोका। जब वह न मानी तो उसने उसे पीट दिया। बेचारी लड़की रोने लगी। इस बार जब उसने डिबिया खोली तो देखा कि उसके पहले के इकट्ठे कई रुपये उड़ गये हैं। अब उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने आगे कोई बुरा काम न करने का पक्का निश्चय कर लिया।

मनुष्य जैसे काम करता है, वैसा उसका स्वभाव हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाता है। जो बुरे काम करता है, उसका स्वभाव बुरा हो जाता है। उसे फिर बुरा काम करने में ही आनन्द आता है। जो अच्छा काम करता है, उसका स्वभाव अच्छा हो जाता है। उसे बुरा काम करने की बात भी बहुत बुरी लगती है। लक्ष्मीनारायण पहले रुपये के लोभ से अच्छा काम करता था। धीरे-धीरे उसका स्वभाव ही अच्छा काम करने का हो गया। अच्छा काम करते-करते उसकी डिबिया रुपयों से भर गयी। स्वर्ग देखने की आशा से प्रसन्न होता, उस डिबिया को लेकर वह अपने बगीचे में पहुँचा।

लक्ष्मीनारायण ने देखा कि बगीचे में पेड़ के नीचे बैठा हुआ एक बूढ़ा साधु रो रहा है। वह दौड़ता हुआ साधु के पास गया और बोला—'बाबा! आप क्यों रो रहे हैं?'

साधु बोला—'बेटा! जैसी डिबिया तुम्हारे हाथ में है, वैसी ही एक डिबिया मेरे पास थी। बहुत दिन परिश्रम करके मैंने उसे रुपयों से भरा था। बड़ी आशा थी कि उसके रुपयों से स्वर्ग देखूँगा; किंतु आज गंगाजी में स्नान करते समय वह डिबिया पानी में गिर गयी।'

लक्ष्मीनारायण ने कहा—'बाबा! आप रोओ मत। मेरी डिबिया भी भरी हुई है। आप इसे ले लो।'

साधु बोला—'तुमने इसे बड़े परिश्रम से भरा है, तुम्हें इसे देने से दुःख होगा।'

लक्ष्मीनारायण ने कहा—'मुझे दुःख नहीं होगा बाबा! मैं तो लड़का हूँ। मुझे अभी पता नहीं कितने दिन जीना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। मैं तो ऐसी कई डिबिया रुपये इकट्ठे कर सकता हूँ। आप बूढ़े हो गये हैं। आप अब दूसरी डिबिया पता नहीं भर पावेंगे या नहीं। इसलिये आप मेरी डिबिया ले लीजिये।'

साधु ने डिबिया लेकर लक्ष्मीनारायण के नेत्रों पर हाथ फेर दिया। लक्ष्मीनारायण के नेत्र बंद हो गये। उसे स्वर्ग दिखायी पड़ने लगा—ऐसा सुन्दर स्वर्ग कि दादी ने जो स्वर्ग का वर्णन किया था, वह वर्णन तो स्वर्ग के एक कोने का भी ठीक वर्णन नहीं था।

जब लक्ष्मीनारायण ने नेत्र खोले तो साधु के बदले स्वप्न में दिखायी पड़ने वाला वही देवता उसके सामने प्रत्यक्ष खड़ा था। देवता ने कहा—'बेटा! जो लोग अच्छे काम करते हैं, स्वर्ग उनका घर बन जाता है। तुम इसी प्रकार जीवन में भलाई करते रहोगे तो अन्त में स्वर्ग में पहुँच जाओगे।'

देवता इतना कहकर वहीं अदृश्य हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सबसे बड़ा पुण्यात्मा

काशी प्राचीन समय से प्रसिद्ध है। संस्कृत-विद्या का वह पुराना केन्द्र है। उसे भगवान् विश्वनाथ की नगरी या विश्वनाथ पुरी भी कहा जाता है। विश्वनाथजी का वहाँ बहुत प्राचीन मन्दिर है। एक दिन विश्वनाथजी के पुजारी ने स्वप्न देखा कि भगवान् विश्वनाथ उससे मन्दिर में विद्वानों तथा धर्मात्मा लोगों की सभा बुलाने को कह रहे हैं। पुजारी ने दूसरे दिन सबेरे ही सारे नगर में इसकी घोषणा करवा दी।

काशी के सभी विद्वान, साधु और दूसरे पुण्यात्मा दानी लोग भी गंगाजी में स्नान करके मन्दिर में आये। सब ने विश्वनाथजी को जल चढ़ाया, प्रदक्षिणा की और सभा-मण्डप में तथा बाहर खड़े हो गये। उस दिन मन्दिर में बहुत भीड़ थी। सबके आ जाने पर पुजारी ने सबसे अपना स्वप्न बताया। सब लोग 'हर-हर महादेव' की ध्वनि करके शंकरजी की प्रार्थना करने लगे।

जब भगवान् की आरती हो गयी, घड़ी-घण्टे के शब्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बंद हो गये और सब लोग प्रार्थना कर चुके, तब सबने देखा कि मन्दिर में अचानक खूब प्रकाश हो गया है। भगवान् विश्वनाथ की मूर्ति के पास एक सोने का पत्र पड़ा था, जिस पर बड़े-बड़े रत्न जड़े हुए थे। उन रत्नों की चमक से ही मन्दिर में प्रकाश हो रहा था। पुजारी ने वह रत्न-जटित स्वर्णपत्र उठा लिया। उस पर हीरों के अक्षरों में लिखा था—'सबसे बड़े दयालु और पुण्यात्मा के लिये यह विश्वनाथजी का उपहार है।'

पुजारी बड़े त्यागी और सच्चे भगवद्भक्त थे। उन्होंने वह पत्र उठाकर सबको दिखाया। वे बोले—'प्रत्येक सोमवार को यहाँ विद्वानों की सभा होगी। जो सबसे बड़ा पुण्यात्मा और दयालु अपने को सिद्ध कर देगा, उसे यह स्वर्णपत्र दिया जायगा।'

देश में चारों ओर यह समाचार फैल गया। दूर-दूर से तपस्वी, त्यागी, व्रत करने वाले, दान करने वाले काशी आने लगे। एक ब्राह्मण ने कई महीने लगातार चान्द्रायण-व्रत किया था। वे उस स्वर्णपत्र को लेने आये। लेकिन जब स्वर्णपत्र उन्हें दिया गया, उनके हाथ में जाते ही वह मिट्टी का हो गया, उसकी ज्योति नष्ट हो गयी। लज्जित होकर उन्होंने स्वर्णपत्र लौटा दिया। पुजारी के हाथ में जाते ही वह फिर सोने का हो गया और उसके रत्न चमकने लगे।

एक बाबूजी ने बहुत-से विद्यालय बनवाये थे। कई स्थानों पर सेवाश्रम चलाते थे। दान करते-करते उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

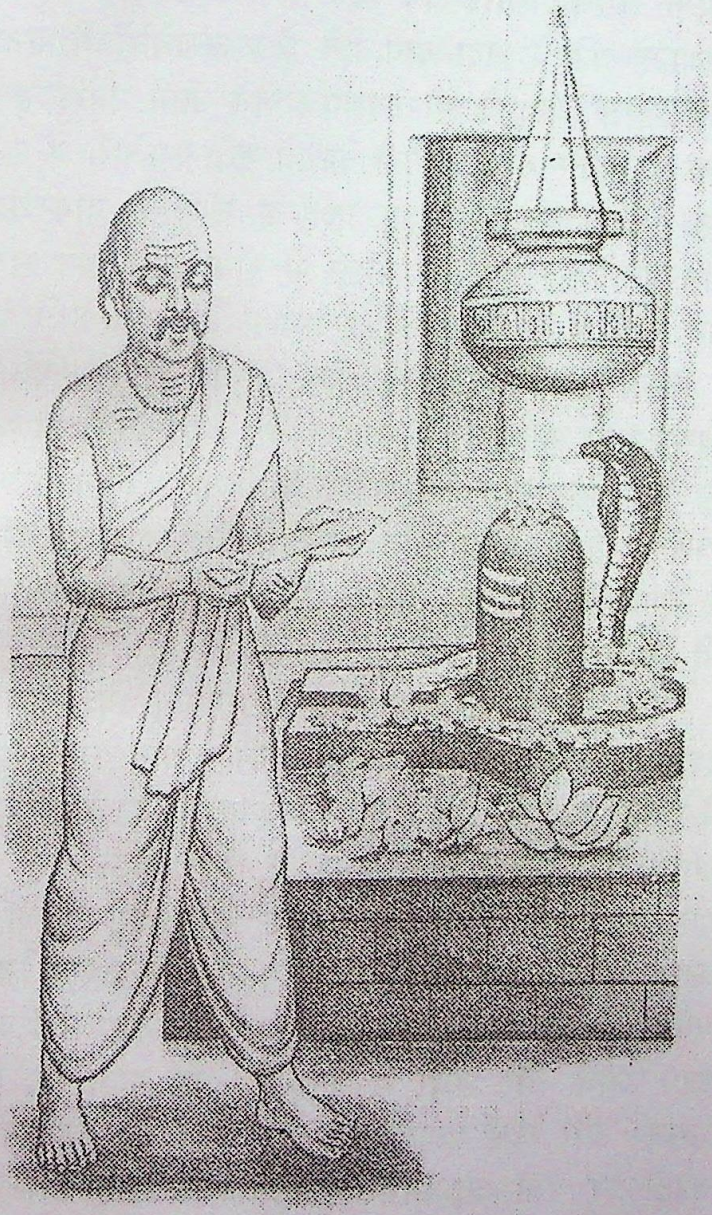

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपना लगभग सारा धन खर्च कर दिया था। बहुत-सी संस्थाओं को वे सदा दान देते थे। अखबारों में उनका नाम छपता था। वे भी स्वर्णपत्र लेने आये, किंतु उनके हाथ में जाकर भी वह मिट्टी का हो गया। पुजारी ने उनसे कहा—'आप पद, मान या यश के लोभ से दान करते जान पड़ते हैं। नाम की इच्छा से होने वाला दान सच्चा दान नहीं है।'

इसी प्रकार बहुत-से लोग आये, किंतु कोई भी स्वर्णपत्र पा नहीं सका। सबके हाथों में पहुँचकर वह मिट्टी का हो जाता था। कई महीने बीत गये। बहुत-से लोग स्वर्णपत्र पाने के लोभ से भगवान् विश्वनाथ के मन्दिर के पास ही दान-पुण्य करने लगे। लेकिन स्वर्णपत्र उन्हें भी मिला नहीं।

एक दिन एक बूढ़ा किसान भगवान् विश्वनाथ के दर्शन करने आया। वह देहाती किसान था। उसके कपड़े मैले और फटे थे। वह केवल विश्वनाथजी का दर्शन करने आया था। उसके पास कपड़े में बँधा थोड़ा सत्तू और एक फटा कम्बल था। मन्दिर के पास लोग गरीबों को कपड़े और पूड़ी-मिठाई बाँट रहे थे; किंतु एक कोढ़ी मन्दिर से दूर पड़ा कराह रहा था। उससे उठा नहीं जाता था। उसके सारे शरीर में घाव थे। वह भूखा था, किंतु उसकी ओर कोई देखता तक नहीं था। बूढ़े किसान को कोढ़ी पर दया आ गयी। उसने अपना सत्तू उसे खाने को दे दिया और अपना कम्बल उसे उढ़ा दिया। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से वह मन्दिर में दर्शन करने आया।

मन्दिर के पुजारी ने अब नियम बना लिया था कि सोमवार को जितने यात्री दर्शन करने आते थे, सबके हाथ में एक बार वह स्वर्णपत्र रखते थे। बूढ़ा किसान जब विश्वनाथजी का दर्शन करके मन्दिर से निकला, पुजारी ने स्वर्णपत्र उसके हाथ में रख दिया। उसके हाथ में जाते ही स्वर्णपत्र में जड़े रत्न दुगुने प्रकाश से चमकने लगे। सब लोग बूढ़े की प्रशंसा करने लगे।

पुजारी ने कहा—'यह स्वर्णपत्र तुम्हें विश्वनाथजी ने दिया है। जो निर्लोभ है, जो दीनों पर दया करता है, जो बिना किसी स्वार्थ के दान करता है और दुखियों की सेवा करता है, वही सबसे बड़ा पुण्यात्मा है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मक्खी का लोभ

एक व्यापारी अपने ग्राहक को शहद दे रहा था। अचानक व्यापारी के हाथ से छूटकर शहद का बर्तन गिर पड़ा। बहुत-सा शहद भूमि पर ढुलक गया। जितना शहद व्यापारी उठा सकता था, उतना उसने ऊपर-ऊपर से उठा लिया; लेकिन कुछ शहद भूमि में गिरा रह गया।

बहुत-सी मक्खियाँ शहद की मिठास के लोभ से आकर उस शहद पर बैठ गयीं। मीठा-मीठा शहद उन्हें बहुत अच्छा लगा। जल्दी-जल्दी वे उसे चाटने लगीं। जब तक उनका पेट भर नहीं गया, वह शहद चाटने में लगी रहीं।

जब मक्खियों का पेट भर गया, उन्होंने उड़ना चाहा लेकिन उनके पंख शहद से चिपक गये थे। उड़ने के लिये जितना छटपटाती थीं, उतने ही उनके पंख चिपकते जाते थे। उनके सारे शरीर में शहद लगता जाता था।

बहुत-सी मक्खियाँ शहद में लोट-पोट होकर मर गयीं, बहुत-सी पंख चिपकने से छटपटा रही थीं। लेकिन दूसरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

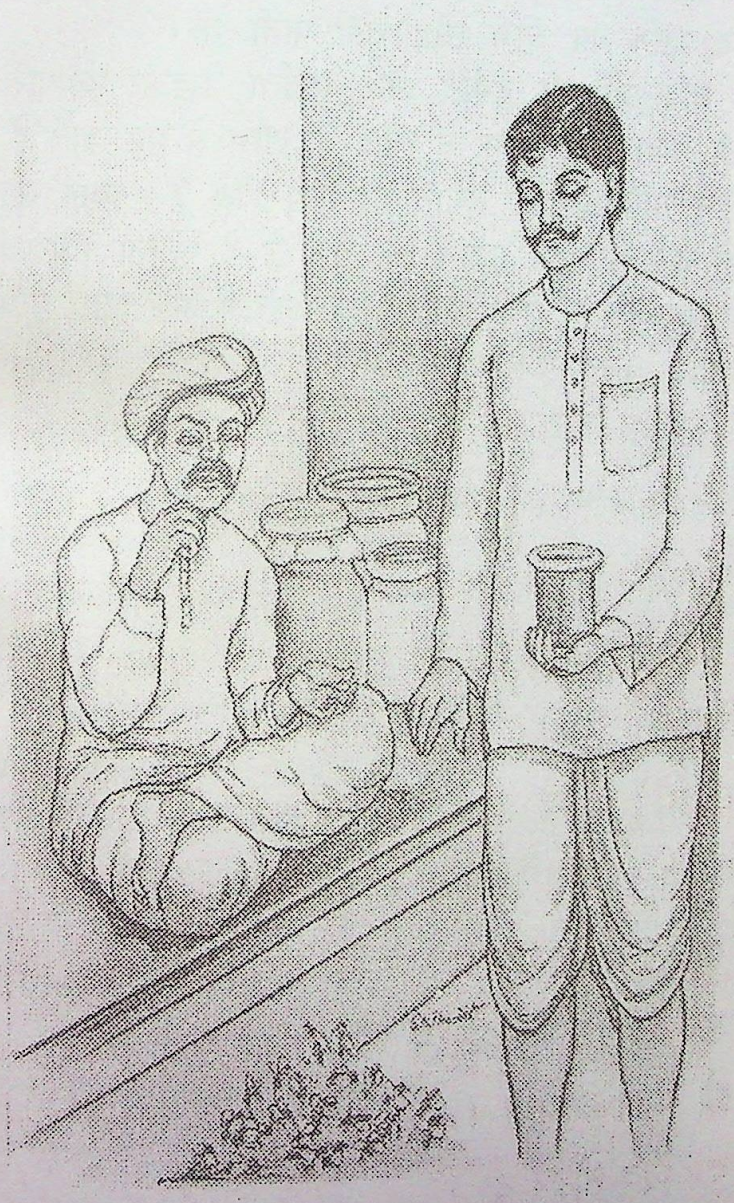

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नयी-नयी मक्खियाँ शहद के लोभ से वहाँ आती जाती थीं। मरी और छटपटाती मक्खियों को देखकर भी वे शहद खाने का लोभ छोड़ नहीं पाती थीं।

मक्खियों की दुर्गति और मूर्खता देखकर व्यापारी बोला—'जो लोग जीभ के स्वाद के लोभ में पड़ जाते हैं, वे इन मक्खियों के समान ही मूर्ख होते हैं। स्वाद का थोड़ी देर का सुख उठाने के लोभ से वे अपना स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं, रोगी बनकर छटपटाते हैं और शीघ्र मृत्यु के ग्रास बनते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एकता की शक्ति

मातादीन के पाँच पुत्र थे—शिवराम, शिवदास, शिवलाल, शिवसहाय और शिवपूजन। ये पाँचों लड़के परस्पर झगड़ा किया करते थे। छोटी-सी बात पर भी आपस में 'तू-तू', 'मैं-मैं' करने लगते और गुत्थमगुत्थी कर लेते थे।

मातादीन अपने लड़कों के झगड़े से बहुत ऊब गया था। उसने एक दिन उन्हें समझाने के विचार से पास बुलाया। पहिले से पतली-पतली सूखी पाँच टहनियों का उसने एक छोटा गट्ठर बना लिया था। पुत्रों से उसने कहा—'तुममें से जो इन टहनियों के गट्ठर को तोड़ देगा, उसे एक रुपया पुरस्कार मिलेगा।'

पाँचों लड़के झगड़ने लगे कि गट्ठर को पहिले मैं तोड़ूँगा, मैं तोड़ूँगा। उन्हें डर था कि यदि दूसरा भाई पहिले तोड़ देगा तो रुपया उसी को मिल जायगा। मातादीन ने कहा—'पहिले छोटे भाई शिवपूजन को तोड़ने दो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

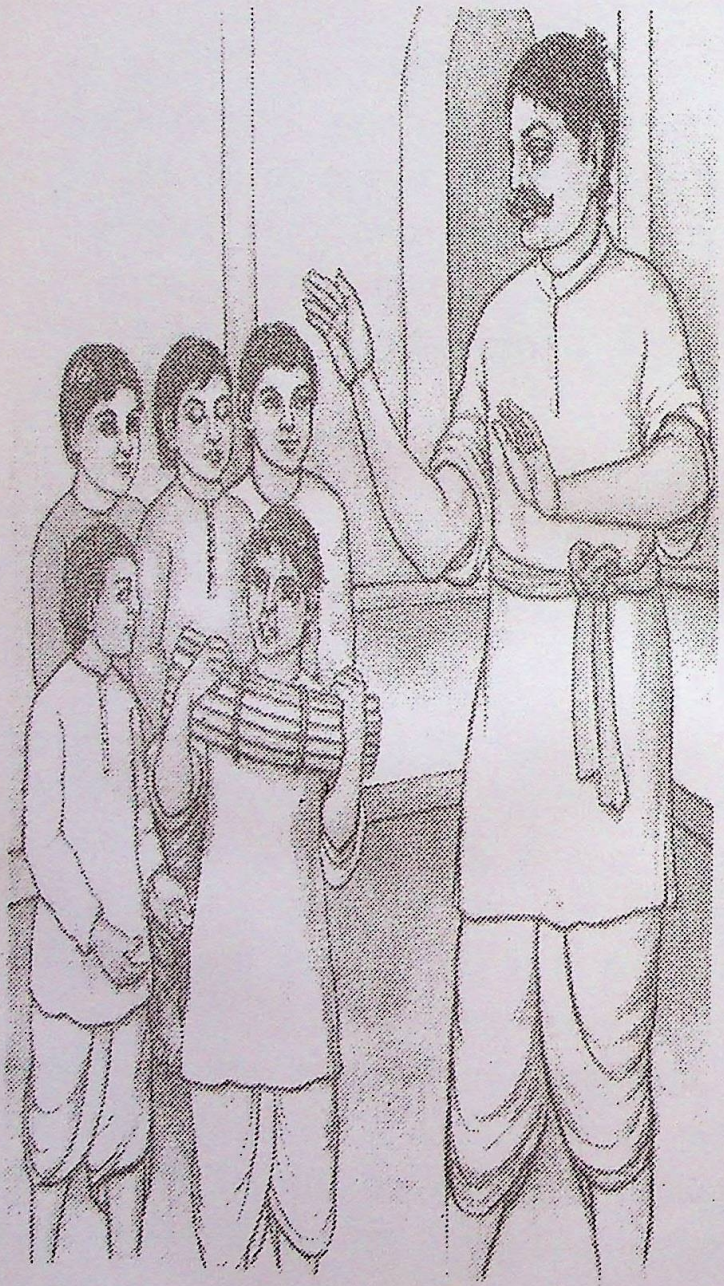

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शिवपूजन ने गट्ठर उठा लिया और जोर लगाने लगा। दाँत दबाकर, आँख मीचकर बहुत जोर उसने लगाया। सिर पर पसीना आ गया; किंतु गट्ठर की टहनियाँ नहीं टूटीं। उसने गट्ठर शिवसहाय को दे दिया। उसने भी जोर लगाया, पर तोड़ नहीं सका। इस प्रकार सब लड़कों ने बारी-बारी से गट्ठर लिया और जोर लगाया; किंतु कोई उसे तोड़ने में सफल नहीं हुआ।

मातादीन ने गट्ठर खोलकर एक-एक टहनी सब लड़कों को दे दी। इस बार सभी ने टहनियों को पटापट तोड़ दिया। अब मातदीन बोला—'देखा, ये टहनियाँ जब तक एक साथ थीं तुममें से कोई उन्हें तोड़ नहीं सका और जब ये अलग-अलग हो गयीं तो तुमने सरलता से सबको तोड़ डाला। इसी प्रकार यदि तुम लोग आपस में झगड़ते और अलग रहोगे तो दूसरे लोग तुम लोगों को तंग करेंगे और दबा लेंगे। लेकिन यदि तुम लोग परस्पर मेल से रहोगे तो कोई तुमसे शत्रुता करने का साहस ही नहीं करेगा।'

मातादीन के लड़कों ने उसी दिन से आपस में झगड़ना छोड़ दिया। वे मेल से रहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

असमय का उपदेश

देवीसहाय का लड़का भगवतीप्रसाद बीमार हो गया था। वह गरमी की दोपहरी में घर से चुपचाप आम चुनने भाग गया और वहाँ उसे लू लग गयी। उसे जोर से ज्वर चढ़ा था। देवीसहाय ने वैद्यजी को अपने लड़के की चिकित्सा के लिये बुलाया।

वैद्यजी ने आकर लड़के की नाड़ी देखी और कहा—'इसे लू लगी है। यह बड़ा चंचल जान पड़ता है। दोपहरी में घर से बाहर जाने का क्या काम था? यह बहुत बुरी बात है। जो लड़के अपने बड़ों की बात नहीं मानते, वे ऐसे ही दुःख भोगते हैं।'

वैद्यजी उपदेश देते जाते थे और लड़के को डाँटते जाते थे। देवीसहाय को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कहा—'वैद्यजी! मैंने आपको बुलाकर भूल की। आप अपनी फीस लीजिये और जाइये। मैं अपने लड़के की चिकित्सा किसी अन्य वैद्य से करा लूँगा। आप तो बीमार लड़के को डाँटकर और दुःखी कर रहे हैं।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

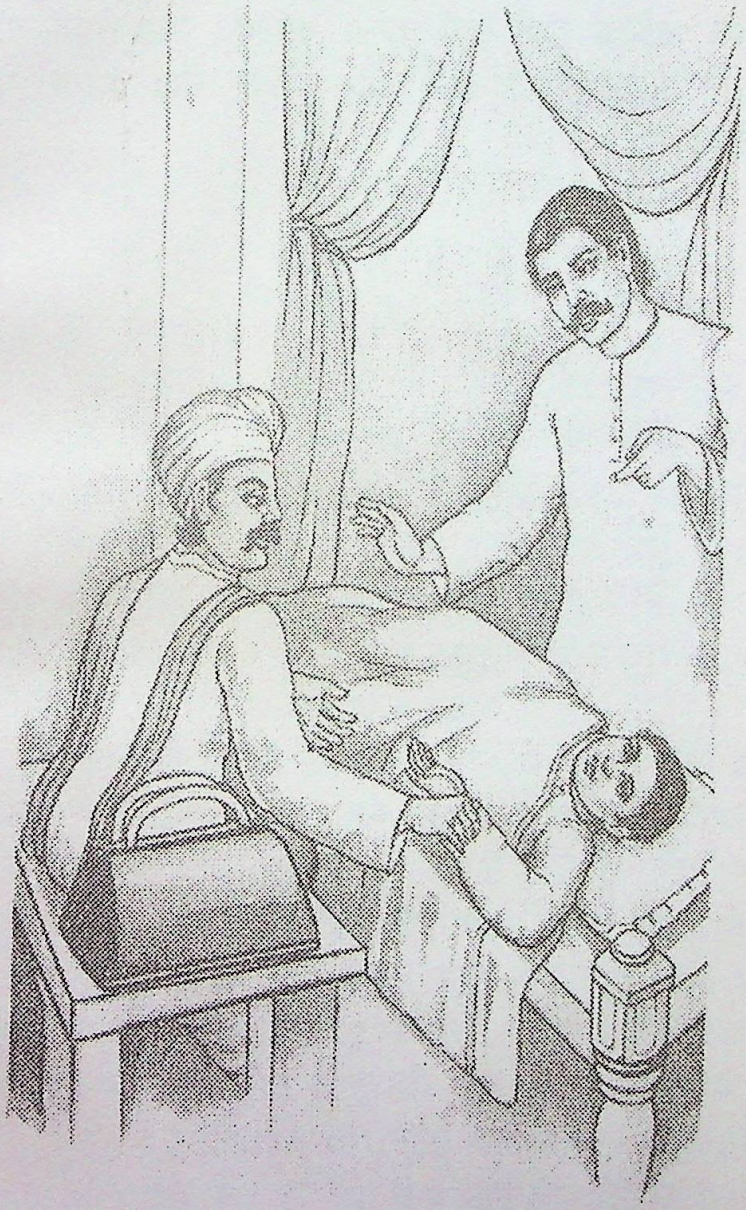

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वैद्यजी बेचारे लज्जित होकर चले गये। जो दुःख में पड़ा है, उसे उस समय उसकी भूलें बताकर और उपदेश देकर अधिक दुखी नहीं करना चाहिए। उस समय तो उससे सहानुभूति दिखाना और उसकी सेवा करना ही उचित है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निर्दयी टट्टू

एक व्यापारी के पास दो टट्टू थे। वह सामान लादकर पहाड़ों पर बसे गाँव में ले जाकर बेचा करता था। एक बार उनमें से एक टट्टू कुछ बीमार हो गया। व्यापारी को पता नहीं था कि उसका एक टट्टू बीमार है। उसे गाँव में बेचने के लिये नमक, गुड़, दाल, चावल आदि ले जाना था। उसने दोनों टट्टुओं पर बराबर-बराबर सामान लाद लिया और चल पड़ा।

ऊँचे-नीचे पहाड़ी रास्ते पर चलने में बीमार टट्टू को बहुत कष्ट होने लगा। उसने दूसरे टट्टू से कहा—'आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं अपनी पीठ पर रखा एक बोरा गिरा देता हूँ, तुम यहीं खड़े रहो। हमारा स्वामी वह बोरा तुम्हारे ऊपर रख देगा। मेरा भार कुछ कम हो जायगा तो मैं तुम्हारे साथ चला चलूँगा। तुम आगे जाओगे तो गिरा बोरा फिर मेरी पीठ पर रखा जायगा।'

दूसरा टट्टू बोला—'मैं तुम्हारा भार ढोने के लिये क्यों खड़ा रहूँ? मेरी पीठ पर क्या कम भार लदा है? मैं अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिस्से का ही भार ढोऊँगा।'

बीमार टट्टू चुप हो गया। लेकिन उसकी तबीयत अधिक खराब हो रही थी। चलते समय एक पत्थर के टुकड़े से ठोकर खाकर वह गिर पड़ा और गड्ढे में लुढ़कता चला गया।

व्यापारी अपने एक टट्टू के मर जाने से बहुत दुखी हुआ। वह थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा। फिर उसने उस टट्टू के बचे हुए बोरे भी दूसरे टट्टू की पीठ पर लाद दिये। अब तो वह टट्टू पछताने लगा और मन-ही-मन कहने लगा—'यदि मैं अपने साथी का कहना मानकर उसका एक बोरा ले लेता तो यह सब भार मुझे क्यों ढोना पड़ता।'

संकट में पड़े अपने साथी की जो सहायता नहीं करते उन्हें पीछे पछताना ही पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्रह्माजी के थैले

इस संसार को बनाने वाले ब्रह्माजी ने एक बार मनुष्य को अपने पास बुलाकर पूछा—'तुम क्या चाहते हो?' मनुष्य ने कहा—'मैं उन्नति करना चाहता हूँ, सुख-शान्ति चाहता हूँ और चाहता हूँ कि अब लोग मेरी प्रशंसा करें।'

ब्रह्माजी ने मनुष्य के सामने दो थैले धर दिये। वे बोले—'इन थैलों को ले लो। इनमें से एक थैले में तुम्हारे पड़ोसी की बुराइयाँ भरी हैं। उसे पीठ पर लाद लो। उसे सदा बंद रखना। न तुम देखना न दूसरे को दिखाना। दूसरे थैले में तुम्हारे दोष भरे हैं। उसे सामने लटका लो और बार-बार खोलकर देखा करो।'

मनुष्य ने दोनों थैले उठा लिये। लेकिन उससे एक भूल हो गयी। उसने अपनी बुराइयों का थैला पीठ पर लाद लिया और उसका मुँह कसकर बंद कर दिया। अपने पड़ोसी की बुराइयों से भरा थैला उसने सामने लटका लिया। उसका मुँह खोलकर वह उसे देखता रहता और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूसरों को भी दिखाता रहता। इससे उसने जो वरदान माँगे थे, वे भी उलटे हो गये। वह अवनति करने लगा। उसे दुःख और अशान्ति मिलने लगी। सब लोग उसे बुरा बताने लगे।

तुम मनुष्य की वह भूल सुधार लो तो तुम्हारी उन्नति होगी। तुम्हें सुख-शान्ति मिलेगी। जगत में प्रशंसा होगी। तुम्हें करना यह है कि अपने पड़ोसी और परिचितों के दोष देखना बंद कर दो और अपने दोषों पर सदा दृष्टि रखो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सच्ची जीत

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसका नाम था शेरसिंह। शेरसिंह शेर जैसा भयंकर और अभिमानी था। वह थोड़ी-सी बात पर बिगड़कर लड़ाई कर लेता था। गाँव के लोगों से सीधे मुँह बात नहीं करता था। न तो वह किसी के घर जाता था और न रास्ते में मिलने पर किसी को प्रणाम करता था। गाँव के किसान भी उसे अहंकारी समझकर उससे नहीं बोलते थे।

उसी गाँव में एक दयाराम नाम का किसान आकर बस गया। वह बहुत सीधा और भला आदमी था। सबसे नम्रता से बोलता था। सबकी कुछ-न-कुछ सहायता किया करता था। सभी किसान उसका आदर करते थे और अपने कामों में उससे सलाह लिया करते थे।

गाँव के किसानों ने दयाराम से कहा--'भाई दयाराम! तुम कभी शेरसिंह के घर मत जाना। उससे दूर ही रहना। वह बहुत झगड़ालू है।'

दयाराम ने हँसकर कहा--'शेरसिंह ने मुझसे झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया तो मैं उसे मार ही डालूँगा।'

दूसरे किसान भी हँस पड़े। वे जानते थे कि दयाराम बहुत दयालु है। वह किसी को मारना तो दूर, किसी को गाली तक नहीं दे सकता। लेकिन यह बात किसी ने शेरसिंह से कह दी। शेरसिंह क्रोध से लाल हो गया। वह उसी दिन से दयाराम से झगड़ने की चेष्टा करने लगा। उसने दयाराम के खेत में अपने बैल छोड़ दिये। बैल बहुत-सा खेत चर गये; किंतु दयाराम ने उन्हें चुपचाप खेत से हाँक दिया।

शेरसिंह ने दयाराम के खेत में जाने वाली पानी की नाली तोड़ दी। पानी बहने लगा। दयाराम ने आकर चुपचाप नाली बाँध दी। इसी प्रकार शेरसिंह बराबर दयाराम की हानि करता रहा; किंतु दयाराम ने एक बार भी उसे झगड़ने का अवसर नहीं दिया।

एक दिन दयाराम के यहाँ उनके सम्बन्धी ने लखनऊ के मीठे खरबूजे भेजे। दयाराम ने सभी किसानों के घर एक-एक खरबूजा भेज दिया; लेकिन शेरसिंह ने उसका खरबूजा यह कहकर लौटा दिया कि 'मैं भिखमंगा नहीं हूँ। मैं दूसरों का दान नहीं लेता।'

बरसात आयी। शेरसिंह एक गाड़ी अनाज भरकर दूसरे गाँव से आ रहा था। रास्ते में एक नाले के कीचड़ में उसकी गाड़ी फँस गयी। शेरसिंह के बैल दुबले थे। वे गाड़ी को कीचड़ में से निकाल नहीं सके। जब गाँव में इस बात की खबर पहुँची तो सब लोग बोले—'शेरसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

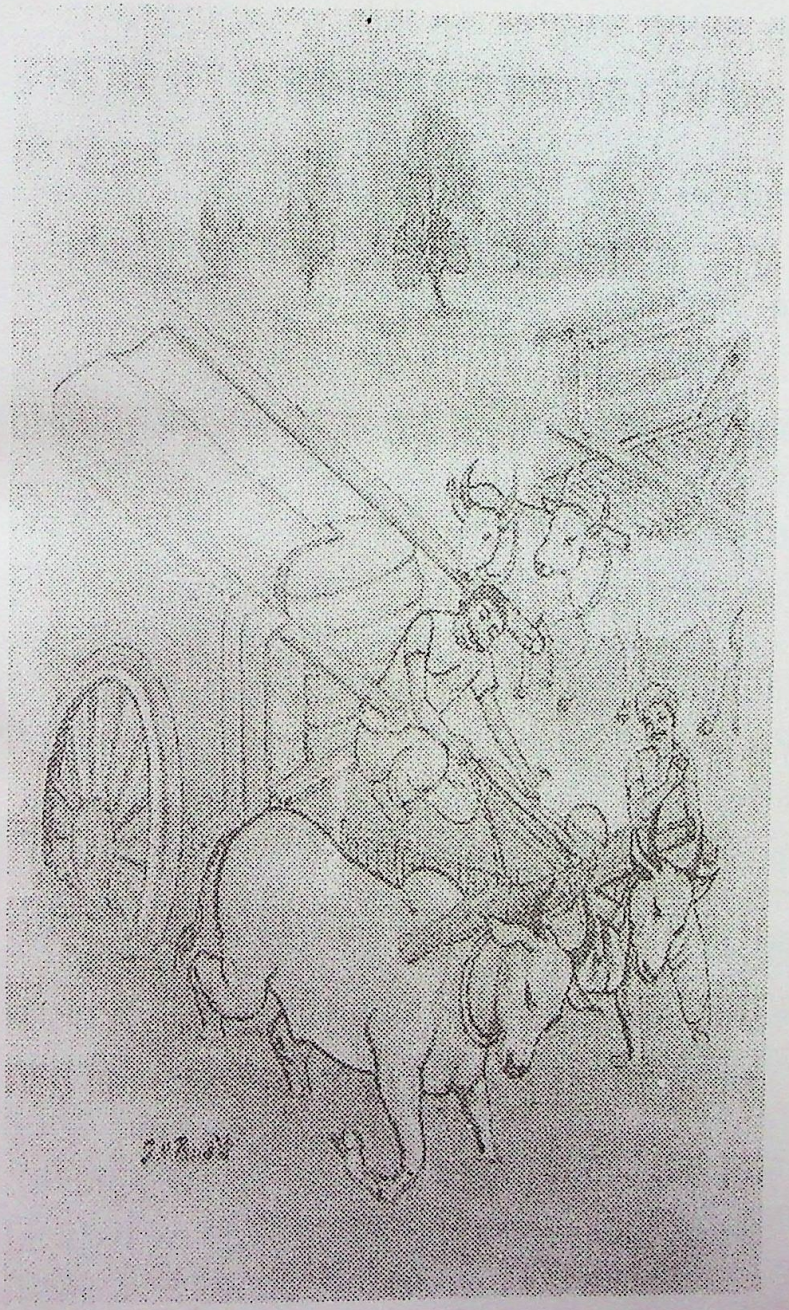

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बड़ा दुष्ट है। उसे रात भर नाले में पड़े रहने दो।'

लेकिन दयाराम ने अपने बलवान् बैल पकड़े और नाले की ओर चल पड़ा। लोगों ने उसे रोका और कहा—'दयाराम! शेरसिंह ने तुम्हारी बहुत हानि की है। तुम तो कहते थे कि मुझसे लड़ेगा तो उसे मार ही डालूँगा। फिर तुम आज उसकी सहायता करने क्यों जाते हो?'

दयाराम बोला—'मैं आज सचमुच उसे मार डालूँगा। तुम लोग सबेरे उसे देखना।'

जब शेरसिंह ने दयाराम को बैल लेकर आते देखा तो गर्व से बोला—'तुम अपने बैल लेकर लौट जाओ। मुझे किसी की सहायता नहीं चाहिए।'

दयाराम ने कहा—'तुम्हारे मन में आवे तो गाली दो, मन में आवे मुझे मारो, इस समय तुम संकट में हो। तुम्हारी गाड़ी फँसी है और रात होने वाली है। मैं तुम्हारी बात इस समय नहीं मान सकता।'

दयाराम ने शेरसिंह के बैलों को खोलकर अपने बैल गाड़ी में जोत दिये। उसके बलवान् बैलों ने गाड़ी को खींचकर नाले से बाहर कर दिया। शेरसिंह गाड़ी लेकर घर आ गया। उसका दुष्ट स्वभाव उसी दिन से बदल गया। वह कहता था—'दयाराम ने अपने उपकार के द्वारा मुझे मार ही दिया। अब मैं वह अहंकारी शेरसिंह कहाँ रहा।' अब वह सबसे नम्रता और प्रेम का व्यवहार करने लगा। बुराई को भलाई से जीतना ही सच्ची जीत है। दयाराम ने सच्ची जीत पायी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मूर्खराज

बादशाह अकबर बीरबल को बहुत मानते थे। मंत्री बीरबल बड़े बुद्धिमान् थे और अपनी विनोदपूर्ण बातों से बादशाह को प्रसन्न रखते थे। अकबर और बीरबल के विनोद की बहुत-सी बातें प्रचलित हैं। उनमें से कुछ बातें बड़े काम की हैं। एक घटना हम यहाँ सुना रहे हैं।

एक बार बादशाह अपने राजमहल में गये। बादशाह की सबसे प्यारी बेगम उस समय अपनी किसी सखी से बातें कर रही थीं। बादशाह अचानक जाकर खड़े हो गये। बेगम उठ खड़ी हुईं और हँसती हुई बोलीं—'आइये मूर्खराज!'

बादशाह को बहुत बुरा लगा। लेकिन बेगम ने इससे पहले कभी बादशाह का अपमान नहीं किया था। बादशाह जानते थे कि बेगम बुद्धिमती हैं। वे बिना कारण के ऐसी बात नहीं कह सकतीं। लेकिन बादशाह यह नहीं जान सके कि बेगम ने उन्हें मूर्खराज क्यों कहा। बेगम से पूछना बादशाह को अच्छा नहीं लगा। थोड़ी देर वहाँ रहकर वे अपने कमरे में चले आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बादशाह उदास बैठे थे। उसी समय बीरबल उनके पास आये। बीरबल को देखते ही बादशाह ने कहा—'आइये मूर्खराज!'

बीरबल हँसकर बोले—'जी मूर्खराजजी!'

बादशाह ने आँख चढ़ाकर कहा—'बीरबल! तुम मुझे मूर्खराज क्यों कहते हो?'

बीरबल ने कहा—'मनुष्य पाँच प्रकार से मूर्ख कहलाता है। यदि दो व्यक्ति अकेले में बातें कर रहे हों और वहाँ कोई बिना बुलाये या बिना सूचना दिये जा खड़ा हो तो उसे मूर्ख कहा जाता है। दो व्यक्ति बातचीत कर रहे हों और उसमें तीसरा व्यक्ति बीच में पड़कर उनकी बात पूरी हुए बिना बोलने लगे तो वह भी मूर्ख कहा जाता है। कोई अपने से कुछ कह रहा हो तो उसकी पूरी बात सुने बिना बीच में बोलने वाला भी मूर्ख माना जाता है। जो बिना अपराध और बिना दोष के दूसरों को गाली दे और दोष लगाये, वह भी मूर्ख है। इसी प्रकार जो मूर्ख के पास जाय और मूर्खों का संग करे, वह भी मूर्ख है।'

बादशाह बीरबल के उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए।

तुम इन बातों को स्मरण कर लो। कभी ऐसी कोई भूल तुमसे नहीं होनी चाहिए कि लोग तुम्हें भी मूर्खराज कह सकें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाओ और आओ

एक गाँव में एक धनी मनुष्य रहता था। उसका नाम भैरोमल था। भैरोमल के पास बहुत खेत थे। उसने बहुत-से नौकर और मजदूर रख छोड़े थे। भैरोमल बहुत सुस्त और आलसी था। वह कभी अपने खेतों को देखने नहीं जाता था। अपने मजदूर और नौकरों को भेजकर ही वह काम कराता था।

मजदूर और नौकर मनमाना काम करते थे। वे लोग खेत पर तो थोड़ी देर काम करते थे, बाकी घर बैठे रहते, इधर-उधर घूमते या गप्पें उड़ाया करते थे। खेत न तो ठिकाने से जोते जाते थे, न सींचे जाते थे और न उनमें ठीक खाद ही पड़ती थी। खेतों में बीज भी ठिकाने से नहीं पड़ते थे और उनकी घास तो कोई निकालता ही नहीं था। इसका फल यह हुआ कि उपज धीरे-धीरे घटने लगी। थोड़े दिनों में भैरोमल गरीब होने लगा।

उसी गाँव में रामप्रसाद नामक एक दूसरा किसान था। उसके पास खेत नहीं थे। वह भैरोमल के ही कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

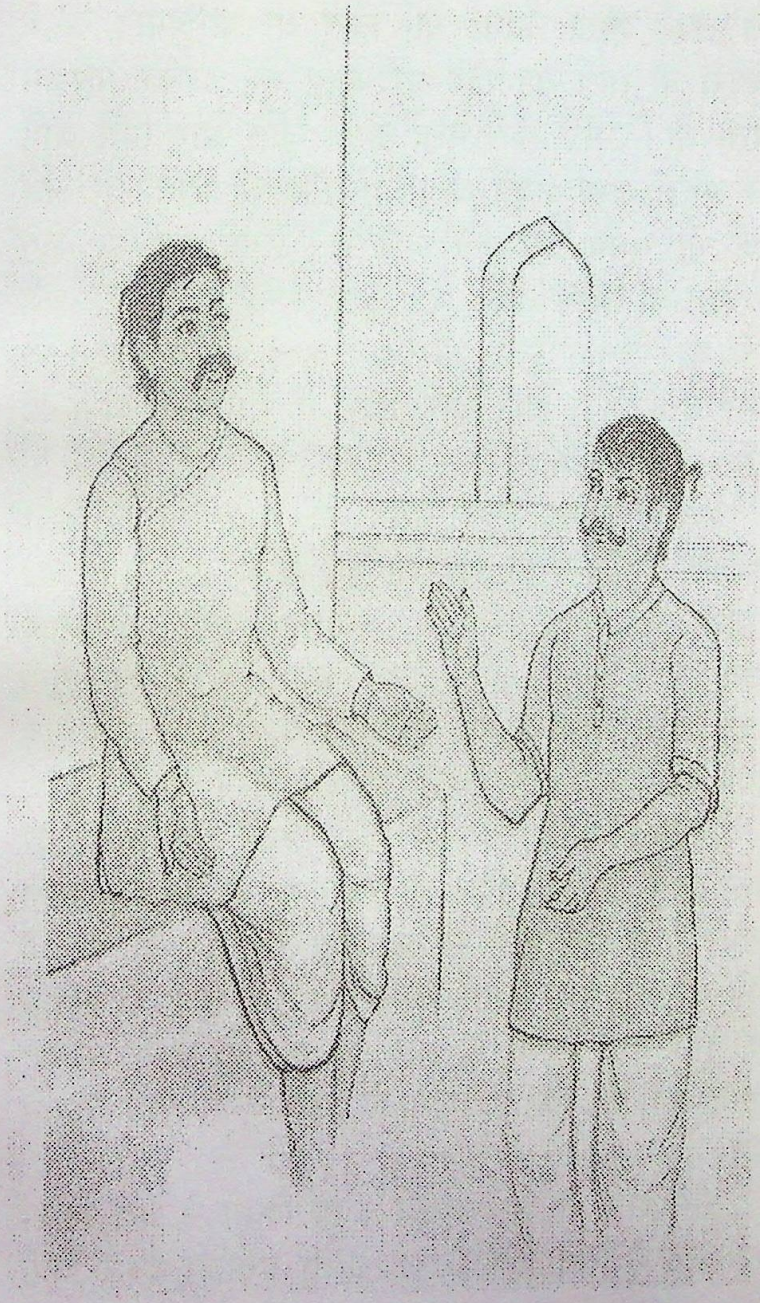

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खेत लेकर खेती करता था; किंतु था परिश्रमी। अपने मजदूरों के साथ वह खेत पर जाता था, डटकर परिश्रम करता था। उसके खेत भली प्रकार जोते और सींचे जाते थे। अच्छी खाद पड़ती थी। घास निकाली जाती थी और बीज भी समय पर बोये जाते थे। उसके घर के लोग भी खेत पर काम करते थे। उसके खेत में उपज अच्छी होती थी। लगान देकर और खर्च करके भी वह बहुत-सा अन्न बचा लेता था। थोड़े दिनों में रामप्रसाद धनी हो गया।

जब भैरोमल बहुत गरीब हो गया, उसके ऊपर महाजनों का ऋण हो गया तो उसे अपने खेत बेचने की आवश्यकता जान पड़ी। यह समाचार पाकर रामप्रसाद उसके पास आया और बोला—'मैंने सुना है कि आप अपने खेत बेचना चाहते हैं। कृपा करके आप मेरे हाथ अपने खेत बेचें। मैं दूसरों से कम मूल्य नहीं दूँगा।'

भैरोमल ने आश्चर्य से पूछा—'भाई रामप्रसाद! मेरे पास इतने खेत थे, फिर भी मैं ऋणी हो गया हूँ; किंतु तुम्हारे पास धन कहाँ से आ गया है? तुम तो मेरे ही थोड़े-से खेत लेकर खेती करते हो। उन खेतों की लगान भी तुम्हें देनी पड़ती है और घर का भी काम चलाना पड़ता है। मेरे खेत खरीदने के लिये तुम्हें रुपये किसने दिये?'

रामप्रसाद ने कहा—'मुझे रुपये किसी ने नहीं दिये। रुपये तो मैंने खेतों की उपज से ही बचाकर इकट्ठे किये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं। आपकी खेती और मेरी खेती में एक अन्तर है। आप नौकरों-मजदूरों आदि सबसे काम करने के लिये 'जाओ-जाओ' कहते हैं, इससे आपकी सम्पत्ति भी चली गयी। मैं मजदूरों और नौकरों से पहले काम करने को तैयार होकर उन्हें अपने साथ काम करने के लिये सदा 'आओ' कहकर बुलाता हूँ। इससे मेरे यहाँ सम्पत्ति आती है।'

अब भैरोमल ठीक बात समझ गया। उसने थोड़े-से खेत रामप्रसाद के हाथ बेचकर अपना ऋण चुका दिया और बाकी खेतों में परिश्रमपूर्वक खेती करने लगा। थोड़े ही दिनों में उसकी दशा सुधर गयी। वह फिर सुखी और सम्पन्न हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खरगोश और मेंढक

एक बार कुछ खरगोश गरमी के दिनों में झरबेरी की एक सूखी झाड़ी में इकट्ठे हुए। खेतों में उन दिनों अन्न न होने से वे सब भूखे थे और इन दिनों सुबह और शाम को गाँव से बाहर घूमने वालों के साथ आने वाले कुत्ते भी उन्हें बहुत तंग करते थे। मैदान की झाड़ियाँ सूख गयी थीं। कुत्तों के दौड़ने पर खरगोशों को छिपने का स्थान बहुत हैरान होने पर मिलता था। इन सब दुःखों से वे सब बेचैन हो गये थे।

एक खरगोश ने कहा—'ब्रह्माजी ने हमारी जाति के साथ बड़ा अन्याय किया है। हमको इतना छोटा और दुर्बल बनाया। हमें उन्होंने न तो हिरन-जैसे सींग दिये, न बिल्ली-जैसे तेज पंजे। अपने शत्रुओं से बचने का हमारे पास कोई उपाय नहीं। सबके सामने से हमें भागना पड़ता है। सब ओर से सारी विपत्ति हम लोगों के सिर पर ही सृष्टिकर्त्ता ने डाल दी है।'

दूसरे खरगोश ने कहा—'मैं तो अब इस दुःख और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आशंका से भरे जीवन से घबरा गया हूँ। मैंने तालाब में डूबकर मर जाने का निश्चय किया है।'

तीसरा बोला—'मैं भी मर जाना चाहता हूँ। अब और दुःख मुझसे नहीं सहा जाता। मैं अभी तालाब में कूदने जाता हूँ।'

'हम सब तुम्हारे साथ चलते हैं। हम सब साथ रहे हैं तो साथ ही मरेंगे।' सब खरगोश बोल उठे। सब एक साथ तालाब की ओर चल पड़े।

तालाब के पानी से निकलकर बहुत-से मेंढक किनारे पर बैठे थे। जब खरगोशों के आने की आहट उन्हें मिली तो वे छपाछप पानी में कूद पड़े। मेंढकों को डरकर पानी में कूदते देख खरगोश रुक गये। एक खरगोश बोला—'भाइयो! प्राण देने की आवश्यकता नहीं है, आओ लौट चलें। जब ब्रह्मा की सृष्टि में हमसे भी छोटे और हमसे भी डरने वाले जीव रहते हैं और जीते हैं, तब हम जीवन से क्यों निराश हों?'

उसकी बात सुनकर खरगोशों ने आत्महत्या का विचार छोड़ दिया और लौट गये। जब तुम पर विपत्ति आये और तुम घबरा उठो तो यह देखो कि संसार में कितने अधिक लोग तुमसे भी अधिक दुखी, दरिद्र, रोगी और संकटग्रस्त हैं। तुम उनसे कितनी अच्छी दशा में हो। फिर तुम्हें क्यों घबराना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बादशाह और माली

फारस देश का बादशाह नौशेरवाँ अपनी न्यायप्रियता के लिये बहुत प्रसिद्ध हो गया था। वह बहुत दानी भी था। एक दिन वह अपने मन्त्रियों के साथ घूमने निकला। उसने देखा कि एक बगीचे में एक बहुत बूढ़ा माली अखरोट के पेड़ लगा रहा है। बादशाह उस बगीचे में गया। उसने माली से पूछा—'तुम यहाँ नौकर हो या यह तुम्हारा ही बगीचा है?'

माली—'मैं नौकरी नहीं करता। यह बगीचा मेरे ही बाप-दादों का लगाया है।'

बादशाह—'तुम ये अखरोट के पेड़ लगा रहे हो। क्या तुम समझते हो कि इनका फल खाने के लिये तुम जीवित रहोगे?'

अखरोट का पेड़ लगाने के बीस बरस बाद फलता है, यह बात प्रसिद्ध है। बूढ़े माली ने बादशाह की बात सुनकर कहा—'मैं अब तक दूसरे के लगाये पेड़ों के बहुत फल खा चुका हूँ। इसलिये मुझे भी दूसरों के लिये पेड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

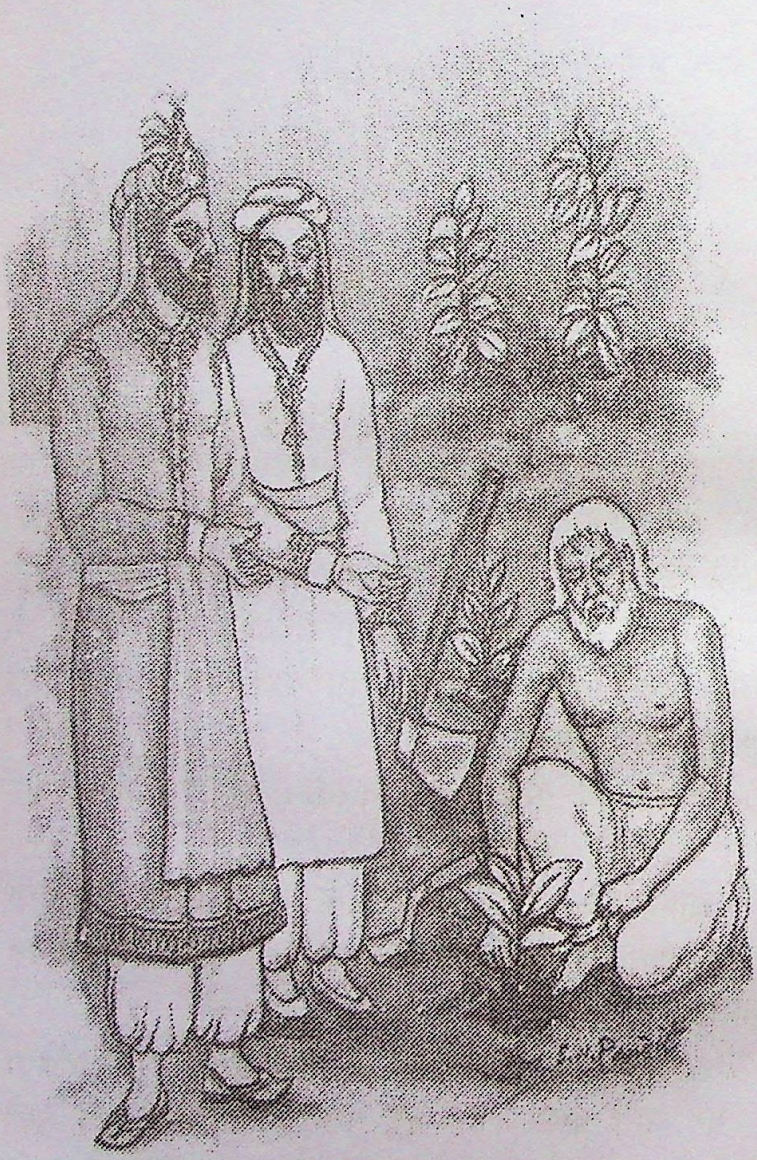

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगाने चाहिए। अपने फल खाने की आशा से ही पेड़ लगाना तो स्वार्थपरता है।'

बादशाह माली के उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे पुरस्कार में दो अशर्फियाँ दीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नेकी का बदला

एक वृक्ष की डाल पर एक कबूतर बैठा था। वह वृक्ष नदी के किनारे था। कबूतर ने डाल पर बैठे-बैठे नीचे देखा कि नदी के पानी में चींटी बहती जा रही है। वह बेचारी बार-बार किनारे आना चाहती है; किंतु पानी की धारा उसे बहाये लिये जा रही है। ऐसा लगता है कि चींटी थोड़े क्षणों में ही पानी में डूबकर मर जायगी। कबूतर को दया आ गयी। उसने चोंच से एक पत्ता तोड़कर चींटी के पास पानी में गिरा दिया। चींटी उस पत्ते पर चढ़ गयी। पत्ता बहकर किनारे लग गया। पानी से बाहर आकर चींटी कबूतर की प्रशंसा करने लगी।

उसी समय एक बहेलिया वहाँ आया और पेड़ के नीचे छिपकर बैठ गया। कबूतर ने बहेलिये को नहीं देखा। बहेलिया अपना बाँस कबूतर को फँसा लेने के लिये ऊपर बढ़ाने लगा। चींटी ने यह सब देखा तो पेड़ की ओर दौड़ी। वह बोल सकती तो अवश्य पुकारकर कबूतर को सावधान कर देती; किंतु बोल तो वह सकती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं थी। अपने प्राण बचाने वाले कबूतर की रक्षा करने का उसने विचार कर लिया था। पेड़ के नीचे पहुँचकर चींटी बहेलिये के पैर पर चढ़ गयी और उसने उसकी जाँघ में पूरे जोर से काट लिया।

चींटी के काटने से बहेलिया चमक गया। उसका बाँस हिल गया। इससे पेड़ के पत्ते खड़क गये और कबूतर सावधान होकर उड़ गया।

जो संकट में पड़े लोगों की सहायता करता है, उस पर संकट आने पर उसकी सहायता का प्रबन्ध भगवान् अवश्य कर देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अतिथि सत्कार

यह कथा पुराण में आयी है। चिड़ियों को फँसाकर उन्हें बेचने वाला एक बहेलिया था। वह दिनभर अपना गोंद लगा बाँस लिये वन में घूमा करता था और चिड़ियों को फँसाया करता था। एक बार सर्दी के दिनों में बहेलिया बड़े सबेरे जंगल में गया। उस दिन उसे कोई चिड़िया नहीं मिली। एक जंगल से दूसरे जंगल में भटकते हुए उसे पूरा दिन बीत गया। वह इतनी दूर निकल गया था कि घर नहीं लौट सकता था। अँधेरा होने पर एक पेड़ के नीचे रात बिता देने के विचार से वह बैठ गया।

उस दिन दिन में वर्षा हुई थी। ओले पड़े थे। सर्दी खूब बढ़ गयी थी। बहेलिये के पास कपड़े नहीं थे। वह जंगल में रात बिताने की बात सोचकर घर से नहीं चला था। हवा जोर से चलने लगी। बहेलिया थर-थर काँपने लगा। जाड़े के मारे उसके दाँत कट-कट बजने लगे।

जिस पेड़ के नीचे बहेलिया बैठा था, उस पेड़ के ऊपर कबूतर का एक जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहेलिये की दुर्दशा देखकर कबूतर ने अपनी कबूतरी से कहा—'यद्यपि यह हम लोगों का शत्रु है; किंतु आज हमारे यहाँ अतिथि हुआ है। इसकी सेवा करना हम लोगों का धर्म है। अभी तो रात प्रारम्भ हुई है। जाड़ा अभी बढ़ेगा। यदि इसे ऐसे ही रहना पड़ा तो रात भर में यह जाड़े के मारे मर जायगा। हम लोगों को इसकी मृत्यु का पाप लगेगा। इसका जाड़ा दूर करने का उपाय करना चाहिए।'

कबूतरी और कबूतर ने अपना घोंसला नीचे गिरा दिया। थोड़े और तिनके चोंच में दबा-दबाकर लाकर गिराये। फिर कबूतरी उड़ गयी और दूर से एक जलती लकड़ी चोंच में पकड़कर ले आयी। वह लकड़ी उसने तिनकों पर डाल दी। तिनके जलने लगे। बहेलिया ने आसपास से इकट्ठी करके और लकड़ियाँ आग में डाल दीं। उसका जाड़ा दूर हो गया।

बहेलिया दिनभर का भूखा था। अब वह अग्नि के प्रकाश में इधर-उधर देखने लगा कि कहीं कुछ मिल जाय तो खाकर भूख मिटावे। उसका मुख भूख से सूख रहा था। कबूतरी ने यह देखा तो वह कबूतर से बोली—'अतिथि तो साक्षात् भगवान् का स्वरूप होता है। जिसके घर से अतिथि भूखा चला जाता है, उसके सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं। यह बहेलिया आज हम लोगों का अतिथि है और भूखा है। हमारे पास इसकी भूख मिटाने को और तो कुछ है नहीं, मैं इस जलती आग में कूदती हूँ, जिससे मेरा माँस खाकर यह अपना पेट भर ले।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कबूतरी इतना कहकर पेड़ से अग्नि में कूद पड़ी। कबूतर ने अपने मन में कहा—'इस अतिथि का पेट कबूतरी के थोड़े से माँस से कैसे भरेगा! मैं भी आग में कूदकर अपना माँस इसे दूँगा।' कबूतर भी आग में कूद पड़ा।

उसी समय आकाश में बाजे बजने लगे। फूलों की वर्षा होने लगी। देवताओं का विमान उतरा और उसमें बैठकर देवताओं के समान रूप धारण करके कबूतर और कबूतरी उस दिव्य लोक को चले गये, जहाँ बड़े-बड़े यज्ञ करने वाले राजा तथा बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी बड़ी कठिनाई से पहुँच पाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सोहबत का असर

एक किसान चिड़ियों से बहुत तंग आ गया था। उसका खेत जंगल के पास था। उस जंगल में पक्षी बहुत थे। किसान जैसे ही खेत में बीज बोकर, पाटा चलाकर घर जाता, वैसे ही झुंड-के-झुंड पक्षी उसके खेत में आकर बैठ जाते और मिट्टी कुरेद-कुरेदकर बोये बीज खाने लगते। किसान पक्षियों को उड़ाते-उड़ाते थक गया। उसके बहुत-से बीज चिड़ियों ने खा लिये। बेचारे को दुबारा खेत जोतकर दूसरे बीज डालने पड़े।

इस बार किसान एक बहुत बड़ा जाल ले आया। उसने पूरे खेत पर जाल बिछा दिया। बहुत-से पक्षी खेत में बीज चुगने आये और जाल में फँस गये। एक सारस पक्षी भी उस जाल में फँस गया।

जब किसान जाल में फँसी चिड़ियों को पकड़ने लगा तो सारस ने कहा—'आप मुझ पर कृपा कीजिये। मैंने आपकी कोई हानि नहीं की है। मैं न मुर्गी हूँ, न बगुला और न बीज खाने वाला कोई और पक्षी। मैं तो सारस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हूँ। खेती को हानि पहुँचाने वाले कीड़ों को मैं खा जाता हूँ। मुझे छोड़ दीजिये।'

किसान क्रोध में भरा था। वह बोला—'तुम कहते तो ठीक हो, किंतु आज तुम उन्हीं चिड़ियों के साथ पकड़े गये हो, जो मेरे बीज खा जाया करती हैं। तुम भी उन्हीं के साथी हो। तुम इनके साथ आये हो तो इनके साथ दण्ड भी भोगो।'

जो जैसे लोगों के साथ रहता है, वह वैसा ही समझा जाता है। बुरे लोगों के साथ रहने में बुराई न करने वालों को भी दण्ड और अपयश मिलता है। उपद्रवी चिड़ियों के साथ आने से सारस को भी बन्धन में पड़ना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सारस की शिक्षा

एक गाँव के पास एक खेत में सारस पक्षी का एक जोड़ा रहता था। वहीं उनके अंडे थे। अंडे बढ़े और समय पर उनसे बच्चे निकले। लेकिन बच्चों के बड़े होकर उड़ने योग्य होने से पहले ही खेत की फसल पक गयी। सारस बड़ी चिन्ता में पड़े। किसान खेत काटने आवे, इससे पहले ही बच्चों के साथ उन्हें वहाँ से चले जाना चाहिए और बच्चे उड़ सकते नहीं थे। सारस ने बच्चों से कहा—'हमारे न रहने पर यदि कोई खेत के पास आवे तो उसकी बात सुनकर याद रखना।'

एक दिन जब सारस चारा लेकर शाम को बच्चों के पास लौटा तो बच्चों ने कहा—'आज किसान आया था। वह खेत के चारों ओर घूमता रहा। एक-दो स्थानों पर खड़े होकर देर तक खेत को घूरता था। वह कहता था कि खेत अब काटने योग्य हो गया। आज चलकर गाँव के लोगों से कहूँगा कि वे मेरा खेत कटवा दें।'

सारस ने कहा—'तुम लोग डरो मत। खेत अभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

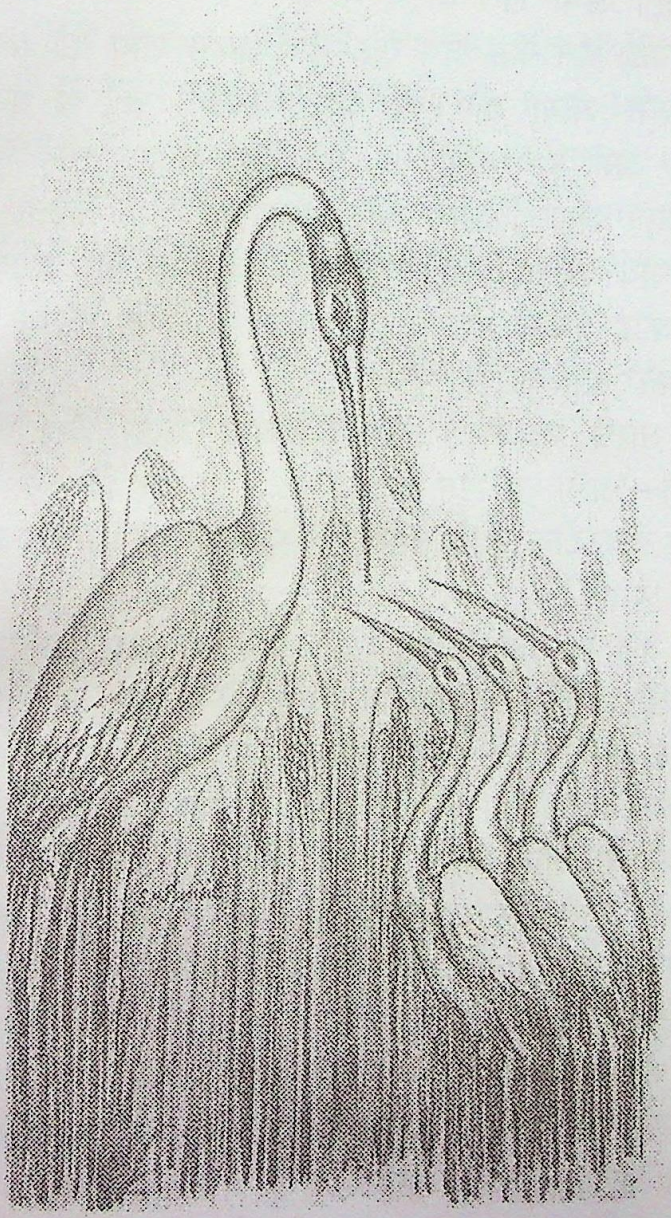

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कटेगा। अभी खेत कटने में देर है।'

कई दिन पीछे जब एक दिन सारस शाम को बच्चों के पास आया तो बच्चे बहुत घबड़ाये थे। वे कहने लगे—'अब हम लोगों को यह खेत झटपट छोड़ देना चाहिए।' आज किसान फिर आया था। वह कहता था कि गाँव के लोग बड़े स्वार्थी हैं। वे मेरा खेत कटवाने का कोई प्रबन्ध नहीं करते। कल मैं अपने भाइयों को भेजकर खेत कटवा लूँगा।'

सारस बच्चों के पास निश्चिन्त होकर बैठा और बोला—'अभी तो खेत कटता नहीं। दो-चार दिन में तुम लोग ठीक-ठीक उड़ने लगोगे। अभी डरने की आवश्यकता नहीं है।'

कई दिन और बीत गये। सारस के बच्चे उड़ने लगे थे और निर्भय हो गये थे। एक दिन शाम को सारस से वे कहने लगे—'यह किसान हम लोगों को झूठ-मूठ डराता है। इसका खेत तो कटेगा नहीं। वह आज भी आया था और कहता था कि मेरे भाई मेरी बात नहीं सुनते। सब बहाना बनाते हैं। मेरी फसल का अन्न सूखकर झर रहा है। कल बड़े सबेरे मैं आऊँगा और खेत काटूँगा।'

सारस घबड़ाकर बोला—'चलो! जल्दी करो! अभी अँधेरा नहीं हुआ है। दूसरे स्थान पर उड़ चलो। कल खेत अवश्य कट जायगा।'

बच्चे बोले—'क्यों? इस बार खेत कट जायगा, यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कैसे?'

सारस ने कहा—'किसान जब तक गाँव वालों और भाइयों के भरोसे था, खेत के कटने की आशा नहीं थी। जो दूसरों के भरोसे कोई काम छोड़ता है, उसका काम नहीं होता। लेकिन जो स्वयं काम करने को तैयार होता है, उसका काम रुका नहीं रहता। किसान जब स्वयं कल खेत काटने वाला है, तब तो खेत कटेगा ही।'

अपने बच्चों के साथ सारस उसी समय वहाँ से उड़कर दूसरे स्थान पर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपकार का बदला

एक बार एक सिंह के पैर में मोटा बड़ा काँटा चुभ गया। सिंह ने दाँत से बहुत नोचा; किंतु काँटा निकला नहीं। वह लँगड़ाता हुआ एक गड़रिये के पास पहुँचा। अपने पास सिंह को आते देख गड़रिया बहुत डरा। लेकिन वह जानता था कि भागने से सिंह दो ही छलाँग में उसे पकड़ लेगा। पास में कोई पेड़ भी नहीं था कि गड़रिया उस पर चढ़ जाय। दूसरा कोई उपाय न देखकर गड़रिया वहीं चुपचाप बैठ गया।

सिंह न गरजा, न गुर्राया। वह गड़रिये के सामने आकर बैठ गया और अपना पैर उसने गड़रिये के आगे कर दिया।

गड़रिये ने समझ लिया कि सिंह उसकी सहायता चाहता है। उसने सिंह के पैर से काँटा निकाल दिया। सिंह जैसे आया था वैसे ही जंगल की ओर चला गया।

कुछ दिनों पीछे राजा के यहाँ चोरी हुई। कुछ लोगों ने शत्रुता के कारण झूठमूठ यह बात राजा से कह दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

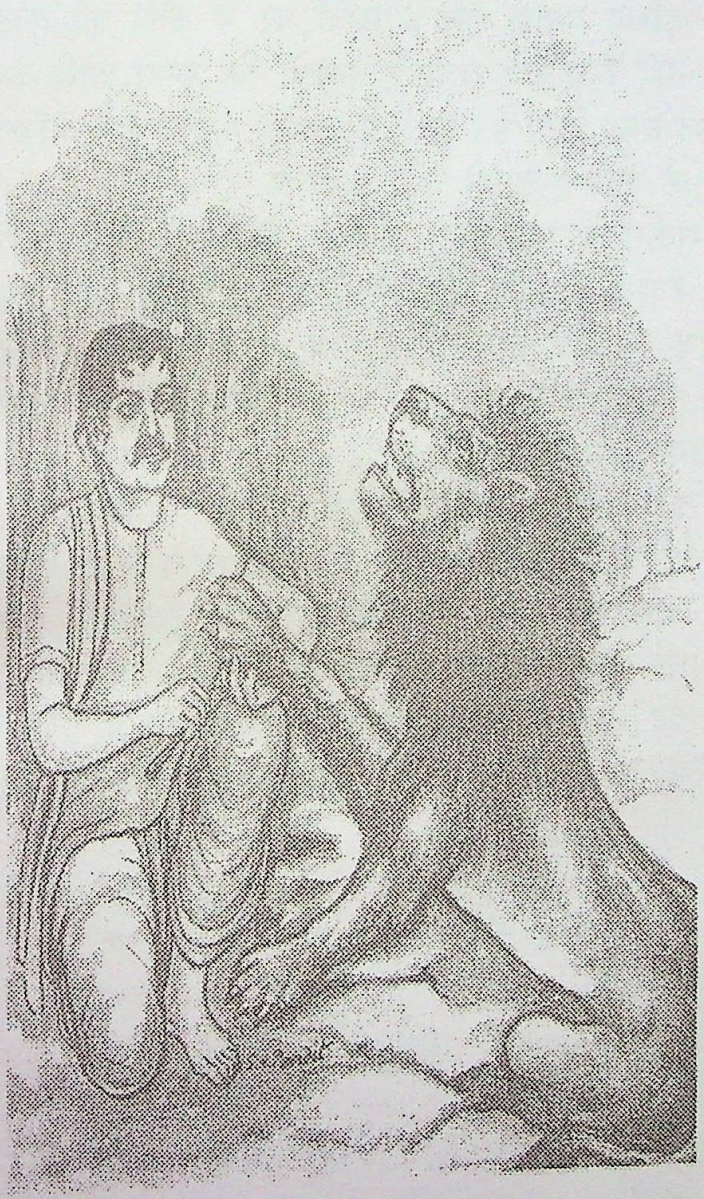

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कि गड़रिया चोर है। उसी ने राजा के यहाँ चोरी की है। गड़रिया पकड़ा गया। उसके घर में चोरी की कोई वस्तु नहीं निकली। राजा ने समझा कि इसने चोरी का सामान छिपा दिया है। इसलिये उन्होंने गड़रिये को जीवित सिंह के सामने छोड़ने की आज्ञा दे दी।

संयोग से गड़रिये को मारने के लिये वही सिंह पकड़ा गया, जिसके पैर का काँटा गड़रिये ने निकाला था। जब गड़रिया सिंह के सामने छोड़ा गया, सिंह ने उसे पहचान लिया। वह गड़रिये के पास आकर बैठ गया और कुत्ते के समान पूँछ हिलाने लगा।

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछने पर जब उन्हें उपकारी गड़रिये के साथ सिंह की कृतज्ञता का हाल ज्ञात हुआ, तब उन्होंने गड़रिये को छोड़ दिया।

सिंह-जैसा भयानक पशु भी अपने पर उपकार करने वाले का उपकार नहीं भूलता। मनुष्य होकर जो किसी का उपकार भूल जाते हैं, वे तो पशु से भी गये-बीते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छली गधा

गधा एक था चरता वन में।
बड़ा कपट था उसके मन में।।
कहीं सिंह का चमड़ा पाया।
उससे उसने रूप बनाया।।
सबको डर दिखलाता था वह।
अच्छे मजे उड़ाता था वह।।
चर जाता था सबके खेत।
सब डरते थे उसको देख।।
कहता था—'मैं वन का राजा।'
खूब हुआ था मोटा ताजा।।
वन-पशुओं को आँख दिखाता।
सब पर जमकर रोब जमाता।।
रात एक उजियाली आयी।
खूब गधे के मन में भायी।।
चरने लगा खेत में जाकर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रखवाले सब भागे डरकर।।
कोई गधा कहीं चिल्लाया।
बस, इसने भी कान उठाया।।
लगा रेंकने मुख ऊपर कर।
भेद खुल गया उसका सब पर।।
रखवालों ने लट्ठ उठाया।
मार-मारकर खूब छकाया।।
जो देता औरों को धोखा।
वह पाता ऐसा फल चोखा।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लालची बंदर

एक बंदर एक मनुष्य के घर प्रतिदिन आता था और ऊधम करता था। वह कभी कपड़े फाड़ देता, कभी कोई बर्तन उठा ले जाता और कभी बच्चों को नोच लेता। वह खाने-पीने की वस्तुएँ ले जाता था, इसका दुःख उन घरवालों को नहीं था; किंतु उस बन्दर के उपद्रव से वे तंग आ गये थे।

एक दिन घर के स्वामी ने कहा—'मैं इस बंदर को पकड़कर बाहर भेज दूँगा।' उसने एक छोटे मुँह की हाँडी मँगायी और उसमें भुने चने डालकर हाँडी को भूमि में गाड़ दिया। केवल हाँडी का मुँह खुला हुआ था। सब लोग वहाँ से दूर चले गये।

वह बंदर घर में आया। थोड़ी देर इधर-उधर कूदता रहा। जब उसने गड़ी हुई हाँडी में चने देखे तो हाँडी के पास आकर बैठ गया। चने निकालने के लिये उसने हाँडी में हाथ डाला और मुट्ठी में चने भर लिये। हाँडी का मुँह छोटा था। उसमें से बँधी मुट्ठी निकल नहीं सकती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

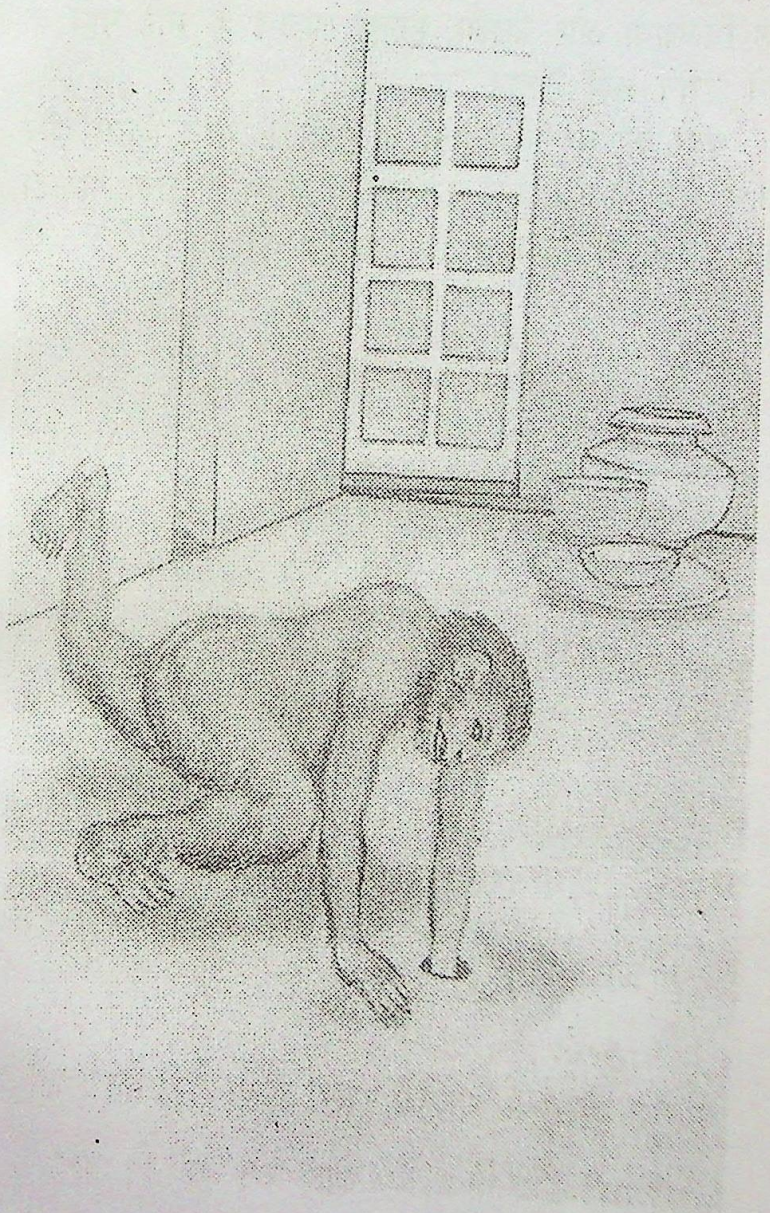

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बंदर मुट्ठी निकालने के लिये जोर लगाने और कूदने लगा। वह चिल्लाया और उछला, किन्तु लालच के मारे मुट्ठी के चने उसने नहीं छोड़े।

बंदर को घर के स्वामी ने रस्सी से बाँध लिया और बाहर भेज दिया। चनों का लालच करने से बंदर पकड़ा गया। इसी से कहावत है—'लालच बुरी बला है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लालची कुत्ता

एक कुत्ता मुख में रोटी का टुकड़ा लिये कहीं जा रहा था। बीच में पानी पड़ता था। पानी गहरा नहीं था। कुत्ता जब पानी में होकर चलने लगा, तब उसे पानी में अपनी परछाईं दिखायी पड़ी।

कुत्ते ने सोचा—'पानी में दूसरा कुत्ता रोटी लिये जा रहा है। मैं इसकी रोटी छीन लूँ तो मेरे पास पूरी रोटी हो जायगी।'

कुत्ते ने जैसे ही परछाईं वाले कुत्ते की रोटी छीनने के लिये मुँह खोला, उसके मुख की रोटी पानी में गिर गयी। वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

आधी छोड़ पूरी को धावै।
आधी रहै न पूरी पावै।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिल्ली और बंदर

एक गाँव में दो बिल्लियाँ रहती थीं। वह आपस में मेल से रहती थीं। उन्हें जो कुछ मिलता था, उसे आपस में बाँटकर खाया करती थीं। एक दिन उन्हें एक रोटी मिली। उसे बराबर-बराबर बाँटते समय उनमें झगड़ा हो गया। एक कहती थी कि तुम्हारी रोटी का टुकड़ा बड़ा है और दूसरी कहती थी कि मेरा टुकड़ा बड़ा नहीं है।

जब दोनों आपस में ठीक बँटवारा नहीं कर सकीं तो एक बंदर के पास गयीं। उन्होंने बंदर को अपना पंच बनाया। बंदर ने एक तराजू मँगाया और रोटी के दोनों टुकड़े एक-एक पलड़े में रख दिये। तौलते समय जो टुकड़ा भारी हुआ, उसमें से उसने थोड़ी-सी रोटी तोड़कर अपने मुँह में डाल ली। अब वह टुकड़ा छोटा हो गया और दूसरा टुकड़ा भारी होने लगा। बंदर ने उस टुकड़े में से थोड़ी रोटी तोड़कर खा ली। इस प्रकार बारी-बारी से दोनों टुकड़ों में से थोड़ी-थोड़ी रोटी तोड़कर बार-बार खाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जब रोटी का बहुत भाग बंदर ने खा लिया और दोनों टुकड़े बहुत छोटे-छोटे रह गये, तब बिल्लियाँ घबरायीं। उन्होंने बंदर से कहा—'अब आप कष्ट न करें। हम लोग आपस में ही बँटवारा कर लेंगी।'

बंदर बोला—'मैंने इतना परिश्रम किया है, मुझे भी तो कुछ मजदूरी चाहिए।' यह कहकर दोनों बचे टुकड़े उसने मुँह में भर लिये और 'हुप', 'हुप' करके बिल्लियों को डराकर भाग गया।

दोनों बिल्लियाँ बहुत पछतायीं और कहने लगीं—'आपस की फूट बहुत बुरी है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेर-चीता लड़े, सियार ने हिरन खाया

किसी जंगल में एक शेर और एक चीता रहता था। वैसे तो शेर बहुत बलवान् होता है; किंतु वह शेर बूढ़ा हो गया था। उससे दौड़ा कम जाता था। चीता मोटा और बलवान् था। इतने पर भी चीता बूढ़े शेर से डरता था और उससे मित्रता रखता था; क्योंकि बूढ़ा होने पर भी शेर चीते से तो कुछ अधिक बलवान् था ही।

एक बार कई दिनों तक शेर और चीते में से किसी को कोई शिकार नहीं मिला। दोनों बहुत भूखे थे। उन्होंने देखा कि एक छोटा-सा हिरन पास में ही चर रहा है। चीते ने शेर से कहा—'मैं हिरन को पकड़ता हूँ। लेकिन आप उस नाले के ऊपर बैठ जायँ, जिससे हिरन नाले में भागकर छिप न सके।'

शेर नाले पर बैठ गया। चीते ने हिरन को दौड़कर पकड़ लिया और मार डाला। लेकिन हिरन बहुत छोटा था। उससे दो में से किसी एक की ही भूख मिट सकती थी। दोनों भूखे थे, इसलिये दोनों के मन में लालच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आया। चीता कहने लगा—'हिरन को मैंने अकेले मारा है, इसलिये मैं ही खाऊँगा।'

शेर बोला—'मैं जंगल का राजा हूँ। हिरन मैं खाऊँगा। तुम तो दौड़ सकते हो, दौड़कर दूसरा शिकार पकड़ो।'

दोनों का झगड़ा बढ़ गया। वे आपस में दाँत और पंजों से लड़ने लगे। झाड़ी में छिपा एक सियार यह सब बातें देख रहा था, जब शेर और चीते ने एक-दूसरे को पंजों और दाँतों से बहुत घायल कर दिया और दोनों भूमि पर गिर पड़े तो सियार झाड़ी से निकला। वह हिरन को घसीटकर झाडी में ले गया और खाने लगा। शेर और चीते में से कोई भी उठ नहीं सकता था। वे देखते ही रह गये।

जब दो व्यक्ति किसी वस्तु के लिये लड़ने लगते हैं तो उन दोनों की हानि होती है। लाभ तो कोई तीसरा ही उठाता है। इसलिये आपस में लड़ना नहीं चाहिए। कुछ हानि भी हो तो उसे सहकर मेल से ही रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

झूठ बोलने का फल

एक गड़रिये का था बाल।
बड़ी बुरी थी उसकी चाल।।
भेड़ चराने जंगल जाता।
झूठ-मूठ वह था चिल्लाता।।
'दौड़ो अरे भेड़िया आया।
उसने मेरी भेड़ उठाया'।।
लोग दौड़कर थे जब आते।
उसे मजे से हँसते पाते।।
सचमुच एक भेड़िया आया।
तब वह मूर्ख बहुत चिल्लाया।।
पर उसको सब झूठा जान।
रहे बैठ बिलकुल चुप ठान।।
भेड़ भेड़िया लेकर भागा।
पछताया वह बाल अभागा।।
झूठ बोलते हैं जो बच्चे।
लोग न कहते उनको अच्छे।।
हैं खोते सबका विश्वास।
पछताते सब खोकर आस।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

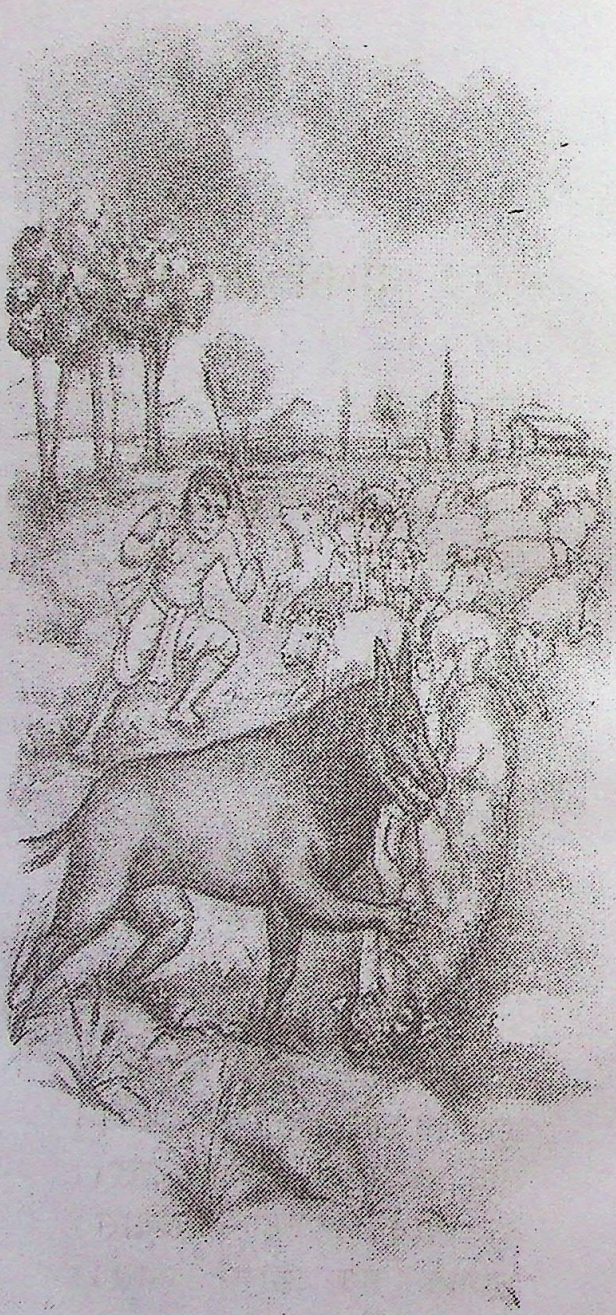

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कछुआ और खरगोश

तुमने खरगोश देखा होगा, खरगोश भूरे और सफेद होते हैं। दूसरे भी कई रंगों के खरगोश पाये जाते हैं। कुछ लोग पालते भी हैं। खरगोश को संस्कृत में शशक कहते हैं। खरगोश बहुत छोटा जानवर होने पर भी दौड़ने में बहुत तेज होता है।

एक बार एक खरगोश बहक रहा था—'मैं बहुत अच्छी चौकड़ी मारता हूँ। मुझसे तेज संसार में और कोई दौड़ नहीं सकता।'

वहीं एक कछुआ पड़ा था। कछुए ने कहा—'भाई! तुम बहुत तेज दौड़ते हो, यह बात तो ठीक है; लेकिन किसी को घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड करने से लज्जित होना पड़ता है।'

खरगोश ने कहा—'मैं अपनी झूठी बड़ाई तो करता नहीं। अपने सच्चे गुण को कहने में क्या दोष है? तू रेंगता हुआ कीड़े की चाल चलता है, इसीलिये मेरा गुण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

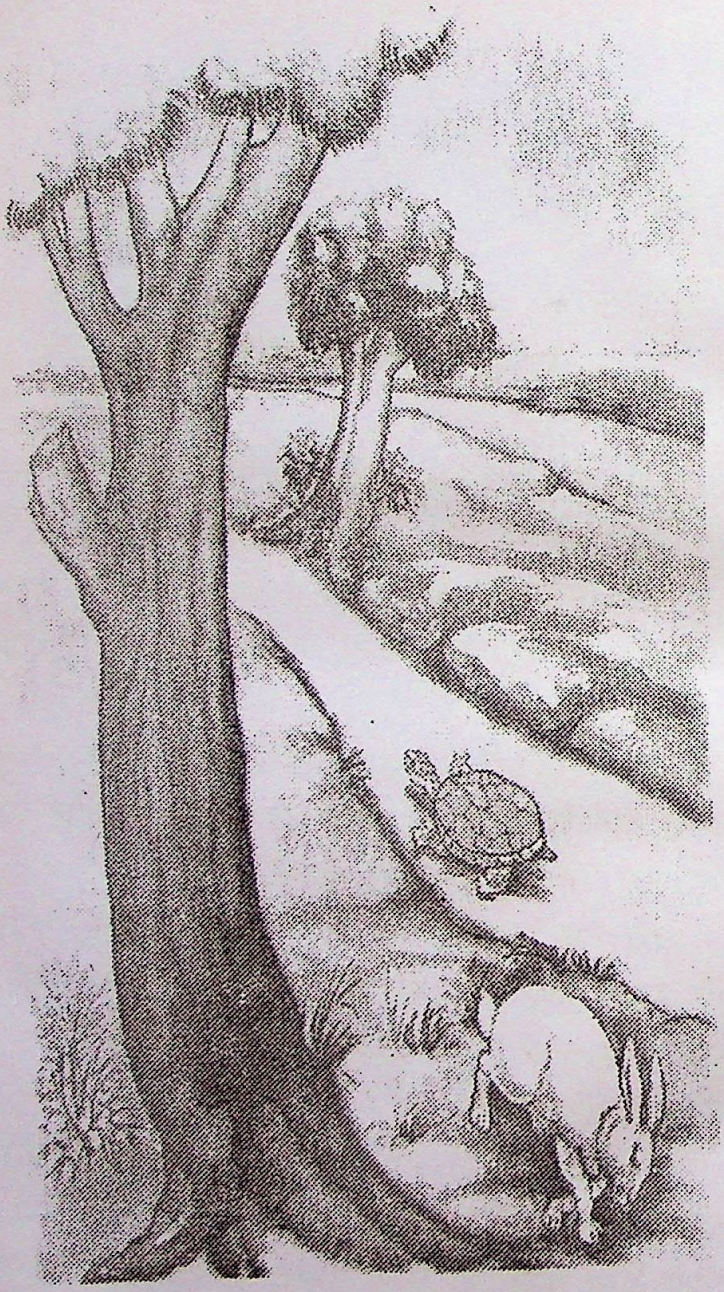

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुनकर तुझे डाह होती है।'

जब खरगोश कछुए को बहुत चिढ़ाने लगा तो कछुए ने कहा—'आपको अपनी चाल का घमंड है तो आइये, हमारी-आपकी दौड़ हो जाय। देखें कौन जीतता है!'

खरगोश ने खूब दूर दीखने वाले एक पेड़ को बताकर कहा—'अच्छी बात है, चलो, उस पेड़ के पास जो पहिले पहुँचेगा, वही जीता माना जायगा।'

खरगोश ने सोचा कि बेचारा कछुआ रेंगता चलेगा। वह पेड़ से चार हाथ दूर रह जाय और तब मैं यहाँ से चलूँ, तो भी चौकड़ियाँ भरूँगा और उससे आगे पहुँच जाऊँगा। उसने कछुए से कहा—'तुम तो सुस्त हो, धीरे-धीरे चलोगे, अभी चल पड़ो। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।'

कछुआ बोला—'दौड़ तो अभी से आरम्भ मानी जायगी। आपके मन में आवे तब चलें।'

खरगोश ने कछुए की बात मान ली। कछुआ धीरे-धीरे रेंगता हुआ चल पड़ा। खरगोश ने सोचा—'यह तो बहुत देर में पेड़ तक पहुँचेगा। तब तक मैं आराम कर लूँ।' वह वहीं लेट गया और सो गया। नींद आ जाने पर उसे पता ही नहीं लगा कि कितनी देर पड़ा-पड़ा सोता रहा। जब उसकी नींद टूटी और दौड़ता हुआ पेड़ के पास पहुँचा तो देखता है कि कछुआ वहाँ पहिले से पहुँच गया है। खरगोश लज्जित हो गया। उसने स्वीकार किया कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

घमंड करना बुरा होता है।

'घमंडी का सिर नीचा' घमंड करने वाले और काम को टालने वाले सदा असफल और अपमानित होते हैं। सफलता और सम्मान उनको ही मिलता है, जो धैर्यपूर्वक काम में लगे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुत्ते की भूल

एक कुत्ते को पक्षियों के अंडे खा जाने का अभ्यास हो गया। वह खेत की मेड़ों और नदी के किनारे घूमा करता और टिटिहरी के अंडे देखते ही खा जाया करता था। नदी-किनारे की रेत में वह कछुए के अंडे ढूँढा करता था।

एक दिन रेत में पड़ा एक घोंघा कुत्ते ने देखा। उसे भी कोई अंडा समझकर वह झटपट निगल गया। घोंघे की सीप के टुकड़े कुत्ते के पेट में जाकर उसकी आँतों में चुभने लगे। वह दर्द के मारे छटपटाने लगा। अब वह रोता-रोता कहने लगा—'मुझसे बड़ी भूल हुई। अब मैं समझा कि सब गोल वस्तुएँ अंडा नहीं होतीं।'

जो नासमझ लड़के बिना जाने कोई भी वस्तु मुँह में डाल लेते हैं, उन्हें इसी प्रकार कष्ट होता है। इसलिये जब तक यह न जान लो कि कोई वस्तु खाने योग्य है या नहीं, उसे मुख में मत डालो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

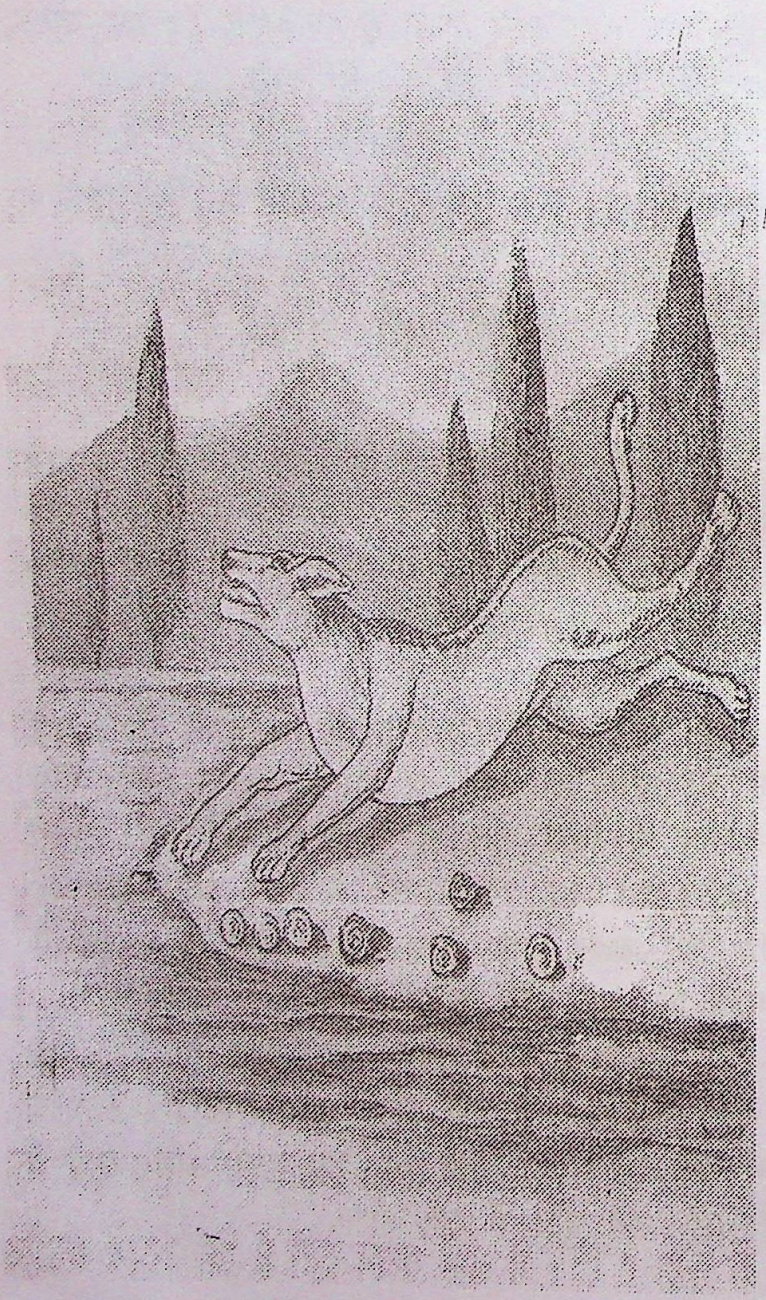

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सच्चे हिरन

पुराण में एक बहुत सुन्दर कथा आती है। एक जंगल में एक तालाब था। उस जंगल के पशु उसी तालाब में पानी पीने आया करते थे। एक दिन एक शिकारी उस तालाब के पास आया। उसने तालाब में हाथ-मुँह धोकर पानी पिया। शिकारी बहुत थका था और कई दिन का भूखा था। उसने सोचा—'जंगल के पशु इस तालाब के पास पानी पीने अवश्य आयेंगे। यहाँ मुझे सरलता से शिकार मिल जायगा।' तालाब के पास बेल के पेड़ पर चढ़कर वह बैठ गया।

एक हिरनी थोड़ी देर में तालाब में पानी पीने आयी। शिकारी ने हिरनी को मारने के लिये धनुष पर बाण चढ़ाया। हिरनी ने शिकारी को बाण चढ़ाते देख लिया। वह बोली—'भाई शिकारी! मैं जानती हूँ कि अब मैं भागकर तुम्हारे बाण से बच नहीं सकती; किंतु तुम मुझ पर दया करो। मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे मेरा रास्ता देखते होंगे। तुम मुझे थोड़ी देर की छुट्टी दे दो। मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि अपने बच्चों को दूध पिलाकर और उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

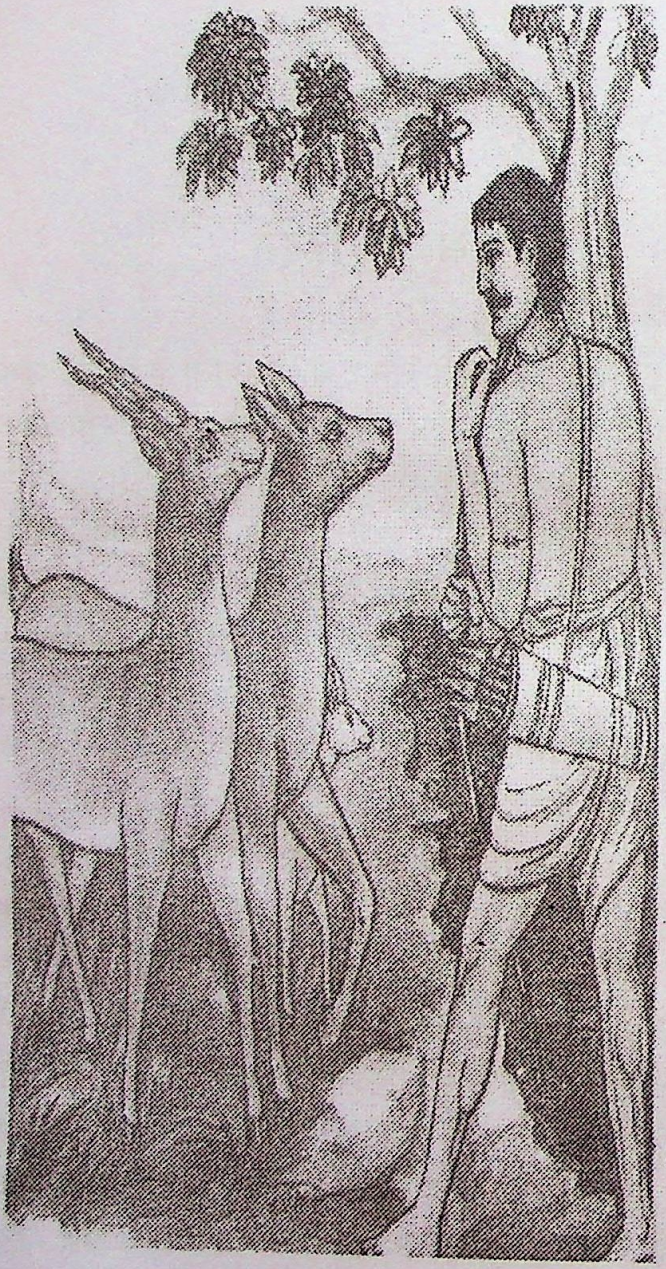

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी सहेली हिरनी को सौंपकर तुम्हारे पास लौट आऊँगी।'

शिकारी हँसा। उसे यह विश्वास नहीं हुआ कि यह हिरनी प्राण देने फिर उसके पास लौटेगी। लेकिन उसने सोचा—'जब यह इस प्रकार कहती है तो इसे छोड़ देना चाहिए। मेरे भाग्य में होगा तो मुझे दूसरा शिकार मिल जायगा।' उसने हिरनी को चले जाने दिया।

थोड़ी देर में वहाँ बड़ी सींगों वाला सुन्दर काला हिरन पानी पीने आया। शिकारी ने जब उसे मारने के लिये धनुष पर बाण चढ़ाया तो हिरन ने देख लिया और बोला—'भाई शिकारी! अपनी हिरनी और बच्चों से अलग हुए मुझे देर हो गयी है। वे सब घबरा रहे होंगे। मैं उनके पास जाकर उनसे मिल लूँ और उन्हें समझा दूँ, तब तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा। इस समय दया करके तुम मुझे चले जाने दो।'

शिकारी बहुत झल्लाया। उसे बहुत भूख लगी थी। लेकिन हिरन को उसने यह सोचकर चले जाने दिया कि मेरे भाग्य में भूखा ही रहना होगा तो आज और भूखा रहूँगा।

हिरनी अपने बच्चों के पास गयी। उसने बच्चों को दूध पिलाया, प्यार किया। फिर अपनी सहेली हिरनी को सब बातें बताकर उसने अपने बच्चे सौंपने चाहे। इतने में वहाँ वह हिरन भी आ गया। उसने भी बच्चों को प्यार किया। बच्चे अपने माता-पिता से अलग होने को तैयार नहीं होते थे। अन्त में उनका हठ मानकर हिरन और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिरनी ने उन्हें भी साथ ले लिया।

तालाब के पास आकर हिरन ने शिकारी से कहा—'भाई शिकारी! अब हम लोग आ गये हैं। तुम अब हमें अपने बाणों से मारो और हमारे माँस से अपनी भूख मिटाओ।'

हिरन और हिरनी की सच्चाई देखकर शिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पेड़ पर से नीचे उतर आया और बोला—'देखो! ये हिरन पशु होकर भी अपनी बात के कितने सच्चे हैं। ये प्राण का मोह छोड़कर सत्य की रक्षा के लिये मेरे पास आये हैं। मनुष्य होकर भी मैं कितना नीच और पापी हूँ कि अपना पेट भरने और चार पैसे कमाने के लिये निरपराध पशुओं की हत्या करता हूँ। अब से मैं किसी पशु को नहीं मारूँगा।'

शिकारी ने अपना धनुष तोड़कर फेंक दिया। उसी समय वहाँ स्वर्ग से एक विमान उतरा। उस विमान को लाने वाले देवदूत ने कहा—'शिकारी! ये हिरन सत्य की रक्षा करने के कारण निष्पाप हो गये हैं, ये अब स्वर्ग को जायँगे। तुमने भी आज इन जीवों पर दया की, इसलिये तुम भी इनके साथ स्वर्ग चलो।'

हिरन-हिरनी और उनके दोनों बच्चों का रूप देवताओं के समान हो गया। वह शिकारी भी देवता बन गया। सत्य और दया के प्रभाव से विमान में बैठकर वे सब स्वर्ग चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूसरे का भरोसा मत करो

एक किसान के पास एक गाय और एक घोड़ा था। वे दोनों एक साथ जंगल में चरते थे। किसान के पड़ोस में एक धोबी रहता था। धोबी के पास एक गधा और एक बकरी थी। धोबी भी उन्हें उसी जंगल में चरने को छोड़ देता था। एक साथ चरने से चारों पशुओं में मित्रता हो गयी। वे साथ ही जंगल में आते और शाम को एक साथ जंगल से चले जाते थे।

उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। खरगोश ने चारों पशुओं की मित्रता देखी तो सोचने लगा—'मेरी भी इनसे मित्रता हो जाय तो बड़ा अच्छा हो। इतने बड़े पशुओं से मित्रता होने पर कोई कुत्ता मुझे तंग नहीं कर सकेगा।'

खरगोश उन चारों के पास बार-बार आने लगा। वह उनके सामने उछलता, कूदता और उनके साथ ही चरता था। धीरे-धीरे चारों के साथ उसकी मित्रता हो गयी। अब खरगोश बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने समझा कि कुत्तों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भय दूर हो गया।

एक दिन एक कुत्ता उस जंगल में आया और खरगोश के पीछे दौड़ा। खरगोश भागा-भागा गाय के पास गया और बोला—'गोमाता! यह कुत्ता बहुत दुष्ट है। यह मुझे मारने आया है। तुम इसे अपनी सींगों से मारो।'

गाय ने कहा—'भाई खरगोश! तुम बहुत देरी से आये। मेरे घर लौटने का समय हो गया है। मेरा बछड़ा भूखा होगा और बार-बार मुझे पुकारता होगा। मुझे घर जाने की जल्दी है। तुम घोड़े के पास जाओ।'

खरगोश दौड़ता हुआ घोड़े के पास गया और बोला—'भाई घोड़े! मैं तुम्हारा मित्र हूँ। हम दोनों साथ ही यहाँ चरते हैं। आज यह दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ा है। तुम मुझे पीठ पर बैठाकर दूर ले चलो।'

घोड़े ने कहा—'तुम्हारी बात तो ठीक है, किंतु मुझे बैठना आता नहीं। मैं तो खड़े-खड़े ही सोता हूँ। तुम मेरी पीठ पर चढ़ोगे कैसे? आजकल मेरे सुम बढ़ गये हैं। मैं न तो तेज दौड़ सकता हूँ और न पैर फटकार सकता हूँ।'

घोड़े के पास से निराश होकर खरगोश गधे के पास गया। उसने गधे से कहा—'मित्र गधे! तुम इस पाजी कुत्ते पर एक दुलत्ती झाड़ दो तो मेरे प्राण बच जायँ।'

गधा बोला—'मैं नित्य गाय और घोड़े के साथ घर लौटता हूँ। वे दोनों जा रहे हैं। यदि मैं उनके साथ न जाकर पीछे रह जाऊँ तो मेरा स्वामी धोबी डंडा लेकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दौड़ा आयेगा और पीटते-पीटते मेरा कचूमर निकाल देगा। मैं अब यहाँ ठहर नहीं सकता।'

अन्त में खरगोश बकरी के पास गया। बकरी ने उसे देखते ही कहा—'खरगोश भाई! कृपा करके इधर मत आओ। तुम्हारे पीछे कुत्ता दौड़ता चला आ रहा है। मैं उससे बहुत डरती हूँ।'

सब ओर से निराश होकर खरगोश वहाँ से भागा। भागते-भागते वह जाकर एक झाड़ी में छिप गया। कुत्ते ने बहुत ढूँढा; किंतु उसे खरगोश का पता नहीं मिला। जब कुत्ता लौट गया, तब खरगोश झाड़ी में से निकला। उसने चारों ओर देखा और संतोष की साँस ली, फिर वह बोला—'दूसरों का भरोसा करना सदा धोखा देता है। अपनी सहायता अपने-आप ही करनी चाहिए।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्व का परिणाम

समुद्रतट के किसी नगर में एक धनवान् वैश्य के पुत्रों ने एक कौआ पाल रखा था। वे उस कौए को बराबर अपने भोजन से बचा अन्न देते थे। उनकी जूठन खाने वाला वह कौआ स्वादिष्ट तथा पुष्टिकर भोजन खाकर खूब मोटा हो गया था। इससे उसका अहंकार बहुत बढ़ गया। वह अपने से श्रेष्ठ पक्षियों को भी तुच्छ समझने और उनका अपमान करने लगा।

एक दिन समुद्रतट पर कहीं से उड़ते हुए आकर कुछ हंस उतरे। वैश्य के पुत्र उन हंसों की प्रशंसा कर रहे थे, यह बात कौए से सही नहीं गयी। वह उन हंसों के पास गया और उसे उनमें जो सर्वश्रेष्ठ हंस प्रतीत हुआ, उससे बोला—'मैं तुम्हारे साथ प्रतियोगिता करके उड़ना चाहता हूँ।'

हंसों ने उसे समझाया—'भैया! हम तो दूर-दूर उड़ने वाले हैं। हमारा निवास मानसरोवर यहाँ से बहुत दूर है। हमारे साथ प्रतियोगिता करने से तुम्हें क्या लाभ होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुम हंसों के साथ कैसे उड़ सकते हो?'

कौए ने गर्व में आकर कहा—'मैं उड़ने की सौ गतियाँ जानता हूँ और प्रत्येक से सौ योजन तक उड़ सकता हूँ।' उड्डीन, अवडीन, प्रडीन, डीन आदि अनेकों गतियों के नाम गिनाकर वह बकवादी कौआ बोला—'बतलाओ, इनमें से तुम किस गति से उड़ना चाहते हो?'

तब श्रेष्ठ हंस ने कहा—'काक! तुम तो बड़े निपुण हो। परंतु मैं तो एक ही गति जानता हूँ, जिसे सब पक्षी जानते हैं। मैं उसी गति से उड़ूँगा।'

गर्वित कौए का गर्व और बढ़ गया। वह बोला—'अच्छी बात, तुम जो गति जानते हो उसी से उड़ो।'

उस समय कुछ पक्षी वहाँ और आ गये थे। उनके सामने ही हंस और कौआ दोनों समुद्र की ओर उड़े। समुद्र के ऊपर आकाश में वह कौआ नाना प्रकार की कलाबाजियाँ दिखाता पूरी शक्ति से उड़ा और हंस से कुछ आगे निकल गया। हंस अपनी स्वाभाविक मन्द गति से उड़ रहा था। यह देखकर दूसरे कौए प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

थोड़ी देर में ही कौए के पंख थकने लगे। वह विश्राम के लिये इधर-उधर वृक्षयुक्त द्वीपों की खोज करने लगा। परंतु उसे उस अनन्त सागर के अतिरिक्त कुछ दीख नहीं पड़ता था। इतने समय में हंस उड़ता हुआ उससे आगे निकल गया था। कौए की गति मन्द हो गयी। वह अत्यन्त थक गया और ऊँची तरंगों वाले भयंकर जीवों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE